हें ॥ जिनिके नांममात्रके लीयेतें समग्रो दुःख हरि होइ ॥ श्री
यह भगवद्शास्त्रमें अंतराय रूप जो प्रतिबंध रूप घोर
तमसो पाप ताको हरि नाम कहें ॥ महा एक रस आनंद रूप
सुखदाई श्रीकृष्ण हें ॥ तिनही में सर्वसिद्धांतको समग्र हहै
ऐसे श्रीकृष्णको भजन स्मरण कर्त्तव्य हें ॥ ऐसे हरिको में
नमस्कार करिकें यह सिद्धांत पुष्टिमार्ग निरूपण करत हें
और ज्ञानमार्गमें अक्षरकी उपासना हें ॥ ताकरिकें जीवमु
क्ति होत हें ॥ सो कलिकाल पायकें ज्ञानके साधनको गयो
अभाव ॥ औरसि व्यामतकें अनेक सास्त्र प्रगट भए ॥ सोमा
यामतके हरिकरणार्थ भक्तिमार्गीय ज्ञानको निरूपण
करत हें ॥ काहेतें मायामत भक्तिमार्गको विरोधी हें सग
रे दैवीजीवनको मोह भयो ॥ सो दैवीजीवनको अज्ञान ह
रिकरणार्थः ॥ भक्तिमार्गको [illegible] भगवानको नमस्का
र करिकें कहत हें ॥ काहेतें दैवी सृष्टि हें ॥ सो श्रीआचार्यजी
के संबंधी हें ॥ जेसें बालकके ऊपर मातापिताको सहजई
में स्नेह हें ॥ तातें अपने बालककी रक्षा करत हें ॥ तेसें ही श्री
आचार्यजी दैवी सृष्टिके मातापिता हें ॥ सो दैवीजीव बाल
ककी नांई ॥ मायामतके सास्त्रमें वेष्टित होय ॥ विचार रहि
त भये हें ॥ सो अपनो भलो बुरो गुन औगुनको भूलि गये हें
काहेतें आसुरीमत सास्त्रमें परिभ्रमण करन लागे ॥ अ
ज्ञान बालककी नांई ॥ ऐसे दैवीजीव बालकके बोधनार्थ
अपने भक्तिमार्गके लक्षण करत हें ॥ काहेतें पिताको उ
चित यह हें ॥ जो बालकको सिक्षा करें ॥ तातें श्रीआचार्यजी अ
पनें मनमें यह निर्धार कीये ॥ जो आवस्यक यह कार्य कर
नों ॥ जीव तो मुग्धबालकको मोह करि सामर्थ्य रहित हें
सो दैवी सृष्टिको भक्तिमार्गके फलरहित होइ तो आसुरीसृ

बा॰टी॰ षिहोयजाय ॥ सो वल्लभाष्टकमें श्रीगुसांईजी कहेहेंजो
३८ श्रीआचार्यजी प्रगटन होतेतो दैवीसृष्टिमर्यादामार्गीयपु
ष्टिमार्गीय दोऊ अव्यर्थहो ॥ जातें फलकी प्राप्तिन होती ॥ ना
विर्भुयाद्य वांस्त्वेदधि धरसि तत्वंभूतना थोदि ता सन्मा
र्गध्वाः तांधतुल्मानीगम पथिगतो देवसर्गे पिजाता घो
षाधीसंतमेवे कथमपिसनु माश्रामुपुर्नैव दैवीसृष्टि
र्थाव्यर्थनिजफलरहिता देववैस्वानरेषा ॥ १ ॥ इति वच
नात ॥ याभांति करि मोहिसास्त्र करि भ्रमत होइ ॥ जीव वा
लककी नाई अज्ञानी भए ॥ तातें वेद पुराण के प्रमाण क
रि वानीके पति श्रीआचार्यजी ने अपने मनमें निश्चे करि
के भक्तिमार्ग को उत्कर्ष आपने पुष्टिमार्ग प्रगट की
ए ॥ सो भक्तिमार्ग में फलरूप श्रीकृष्ण ही बताये ॥ चतुर्व
(पुरुषार्थ अर्थ धर्म काम मोक्ष सब इहलौकिक वैदिक मर्या
दामार्ग को फलता को तुच्छ करिकें निरूपण कीये ॥ और
भक्तिमार्ग में भगवद्सेवा रूप धर्म अर्थ काम मोक्ष लीला
संबंधी वर्नन करिकें जीवन कों सिक्षा कीये ॥ सो अव इ
सरे श्लोक में कहत हें ॥ श्लोक ॥ धर्मार्थकाममोक्षाख्या
स्वार्तेथामनिषिणां ॥ जीवेश्वरविचारेण द्विधातेहि विचा
रिता ॥ २ ॥ याको अर्थ ॥ जो सकल जीव धर्मार्थ काममोक्ष
के प्राप्ति कों उपाय करत हें ॥ सो मर्यादा मार्ग में यह क्रम हे
लौकिक जो प्रथम अर्थ जो द्रव्य होइ ॥ साधन करिकें जब द्र
व्य होइ ॥ तब धर्म करे ॥ पुन्यादिक करे ॥ ता करिकें इसरे जन्म
में राज्य पावे ॥ तब कामादिक भोग करे ॥ सो काम सिद्ध भ
यो ॥ पाछें कामादिक करि राजवी तें पाछें नरक होइ ॥ सो ता
तें नाही हें ॥ काम पीछें मोक्ष कहत हें ॥ सो राज भयो तब राजा
मद करि अपने कों मोक्ष करि जानत हें ॥ सो कोई एक अं

वरीषराजा आदि भगवदवतार होइ॥ तिनकों राजमद नां
ही होत॥ तुछ जीव इंद्रादिक पर्यंत सबकों राजमद होइ सो
तन होइ॥ सो अज्ञान करि विपरीत फल मर्यादा मार्ग में त्रि
रूपण हें॥ अर्थ धर्म काम मोक्ष यह क्रम मर्यादा मार्ग में हें
सो श्री आचार्यजी यह फल कों दुषित निरूपण करि कें भ
क्तिमार्ग चतुष्ट पुरुषार्थ कहत हें॥ सो भक्तिमार्ग में क्रम य
ह हें जो प्रथम धर्म जो वैष्णव होइ॥ श्री आचार्यजी के सरन
आइ नाम समर्पण पावें॥ श्री ठाकुरजी सो पुष्टिमार्ग की
रीति सों पधरावे॥ यह धर्म सिद्धि भयो॥ सो यह परम उत्तम
धर्म हें॥ जो सर्व धर्म के धर्मी स्वरूप श्रीकृष्ण हें॥ सो घर में
पधारें॥ या भांति धर्म सिद्धि भयो॥ तदनंतर वांकी सेवा करे
सो अर्थ या छे सेवा करि नाना प्रकार के उत्सव में मनोरथ
करें॥ स्वरूप की भावना करे लीला की भावना करे॥ यह का
म सिद्धि होइ॥ या प्रकार जब लीला के काम सिद्धि भयो॥ या छे
श्री ठाकुरजी की नित्य लीला में प्राप्ति होइ॥ या प्रकार श्री
आचार्यजी निरूपण कीये हें॥ और मर्यादा मार्गी ये चतुष्ट
पुरुषार्थ कों दुषित कीये॥ तहां कोई कहे जो मर्यादा मार्ग में
श्रुवेद रीति हें॥ सो मर्यादा मार्ग में विपरीत फल क्यों भयो
और यह पुष्टिमार्ग में श्रुवेद शास्त्र प्रमान मार्ग हें॥ यहां श्री
आचार्यजी मुख्य फल कैसें निरूपण कीये॥ सब कों मूल
तो वेद हें॥ या प्रकार कोई संदेह करें॥ तहां कहत हें जो॥ जीव वि
चारेण ईश्वर विचारेण॥ या प्रकार दोय विचार में दोय प्रका
र के भेद भये॥ सो कहत हें॥ वेद हें सो भगवद स्वरूप हें॥ सो वे
द को ज्ञान तो जीव कों दुर्लभ हें॥ काहे तें जीव में अल्पज्ञता न हें
और कलिकाल करि कें भगवद माया में प्रेरित जीव॥ ऐसे
जीव वेद के अर्थ कों कहां जानें॥ और भगवद इच्छा तें महा

वा॰टी॰ ब केअंससरूप मायावादी रिषि भूतल में प्रगट होयकें
३५ मिथ्याशास्त्र अनेक प्रगट करें ॥ ऐसे पंडितनने वेदतें वि
रुध यह चतुर्विध पुरुषार्थ लौकिक रीति सों निरूपण की
ये ॥ सो जीव तो सब अज्ञानी लौकिकासक्ति तो प्रथम हु
ती ओर उपदेस करू लौकिक भयो ॥ सो ताकरिकें लौकि
क में दृढ आसक्ति होयगी ॥ या प्रकार लौकिक फल जीव
कें विचारें तें भयो ॥ ओर श्री आचार्यजी तो ईस्वर को ईस्व
र हे ॥ श्री कृष्ण के मुखारविंद रूप हें ॥ सर्व वेद को सिद्धांत कों
जानत हें ॥ सो लौकिक कौ वे प्रतीत ॥ ऐसे पुरुषोत्तम श्री कृष्ण
तिनही को स्मरण भजन सुख निरूपण कीये ॥ यातें जीव
ईस्वर के विचार में तारतम्य हे ॥ ओर लौकिक में यह चतु
र्विध पुरुषार्थ की अपेक्षा हे ॥ ओर वैदिक मर्यादा में यह च
तुर्विध पुरुषार्थ की अपेक्षा हे ॥ ओर यह पुष्टिमार्ग में यह च
तुर्विध पदारथ की अपेक्षा नाहीं हें ॥ काहेतें लौकिक वैदिक सु
ख मोक्ष पर्यंत तो फल मानत हें ॥ काहेतें लौकिक में वि
षयादि सुख हे ॥ सो सुख अत्यंत में दुःखरूप हें ॥ ओर वैदिक
में स्वर्गलोक को सुख मुख्य हें ॥ सो हू दुःखरूप हें ॥ काहेतें
कोटांन को दिसा धन तें स्वर्ग मिले ॥ सो जब पुन्य क्षीण होइ
तब स्वर्गलोक तें गिरें ॥ भूलोक पर आय के संसार दुःख
को पावें ॥ तातें लौकिक वैदिक सुख हे सो दुःखरूप ही जानें
यह सिद्धांत हे ॥ या प्रकार अर्थ काम मोक्ष चतुर्विध पदार्थ जो
ओर के मत में मुख्य फल हें ॥ सो श्री आचार्यजी तुच्छ फल क
हें ॥ सो श्री कृष्ण ही को भजन स्मरण भजनानंद निश्चय करनो
या प्रकार दोइ श्लोक को वर्णन भयो ॥ २ ॥ अब ओर रू कहत
हें ॥ श्लोक ॥ अलौकिका स्तु वेदोक्ता साध्यसाधन संयुता
लौकिका ऋषिभी प्रोक्ता स्तथैवेस्वर सिद्धिमा ॥ ३ ॥ याको

अर्थ ॥ अब ऊपर चतुष्पदारथ तत्र यामें लौकिक वैदिक फ
लकों तुछ कहे ॥ तहां वादीकों पूर्वपक्ष होत है ॥ जो चतुष्पदा
रथ तुछ कहे ॥ तहां संदेह होत है ॥ काहेते वैदिक फल है सो वे
दोक्त है ॥ वेदरूप ही होइ तो वैदिक फलरूप ही होय ॥ सो वेद तो स
र्वकों प्रमाण है ॥ साक्षात भगवद्स्वरूप है ॥ सो वैदिक फल
तुछ कैसें श्रीआचार्यजी कहे ॥ याकों कारण कहत ॥ या प्रकार
कोई संदेह करे तहां कहत हैं जो वेद तो हमकों प्रमाण है
और वेदकों फल तो पुरुषोत्तम है ॥ सो हमकों प्रमाण है औ
र जीव यह लौकिक यह संसार में प्रगट होइवे इनकों स्वरू
फल स्वर्गादिक निरूपण कीये ॥ तथा लौकिक में द्रव्यादि
क राज ॥ तथा स्त्री पुत्रादिक विषै यह फल निरूपण कीए
सो मायावादी करि विद्वा[illegible] प्रगट कीयो जो मं
ह शास्त्रसों हमकों प्रमाण नाही है ॥ काहेते जैसे लौकिक
सुख स्त्री पुत्रादिक द्रव्यादिक के प्राप्त भये तें भगवद्धर्म
नाही होत ॥ भगवानकों नाही प्राप्त होइ ॥ तैसें ई स्वर्गादिक की
प्राप्ति तें भगवान विस्मृत होइ ॥ सो यह स्वर्गादिक सुख है सो
दुःखरूप ही जांननो ॥ और स्वर्गादिक के प्राप्त में हू अनेक
प्रकार के साधन हैं ॥ साधन में हू अनेक दुख हैं ॥ और स्वर्गा
दिक फल की प्राप्ति में हू दुःख हैं ॥ भगवान के भजन स्मरण
सेवा यह लौकिक साधनादिक में हू परम सुख हैं ॥ और
फल प्राप्त में लीलारस को अनुभव होइ ॥ सोऊ परम सुख
हैं ॥ या प्रकार सों मायामत को वेदविरुद्ध जांनि प्रमांण ना
ही हैं ॥ वेद में भगवान ही निरूपण हैं ॥ सो ई यह पुष्टिमार्ग
में भगवान भजनी हैं ॥ यह सिद्धांत भयो ॥ ३ ॥ अब और हू

षा.टी. आगें कहत हें। श्लोक। लौकिकास्तु प्रवक्ष्यामि वेदाद्य यत
३६ स्थिता। धर्मशास्त्राणि नित्यश्च कामशास्त्राणि चक्रमात् ॥
याकों अर्थ॥ अब ऊपर कहे जो लौकिक जीव मायावादी ऋ
षिकों मत प्रमाण नांही हें। सो आगें तो वेद ही करिकें बडे बडे
भगवदी भगवान कों पाये हें। और बडे बडे ऋषि मुनी भए हें
सोऊ वेद कों निरूपण करि वेदादिक के साधन करि भगवां
न कों पाये। तिन ऋषिन कों और मुनीस्वरन कों लौकिक माया
वादी कैसे कहत हो। सो सतयुग में त्रेता में जो ऋषि भए हें। सो तो
वेद शास्त्र के अनुसार मत कहे। और आप हू वेद रीति कों साध
न करि भगवान कों पाये। काहे तें उन ऋषिनि में भगवान को
अंस हतो। ताकरिकें भगवद्धर्म कों निरूपण कीये। पत्तादि
क होमें वेद के कर्म करि भगवान कों अर्पण करि भगवद् आ
श्रय करि मोक्ष कों प्राप्त भये। और द्वापुर के अंत में कलियुग
के आदि में भगवान की इच्छा तें महादेव के अंस रिषि प्रगट भ
ये। संकराचार्य जी आदि सो कलियुग में मायामत प्रगट क
रिकें चलायो। सो संकर जी व भगवद्धर्म तें विमुख हे॥ दु
राऽचरण करत हें। ऐसे रिषि कों मत प्रमान नांही हें। याप्र
कार ऊ द्रूत मोह शास्त्र करि वेद को तात्पर्य जानत नांही
सब को वेद को तात्पर्य दुर्लभ हे। तें तें ब्रह्मसूत्र आदिकन
श्रेमुखतें यत्तु द्वयई तीव वचनात्। या प्रकार जीव लौकिका
सक्ति भये। ताकरिकें भक्तिमार्ग को फल न प्राप्त भयो। और
मर्यादामार्ग को फल मुक्ति सो ऊ न प्राप्त भयो। वैदिक कार्य जि
तनें जीव करत हें। सोऊ सब लौकिक सकाम होय करत हें
ताते वैदिक धर्म हू सब लौकिकासक्ति यह फल सब विपरी

तजीवनकोंभयो ॥ याप्रकारलौकिकावेसतेंतोवेदादिक
सास्त्रसबकोफलनष्टभयोसोकहें ॥ अबधर्मसास्त्रनिति
आदिजोसोतफलकेसाधनहें सोकामसास्त्रतेंविषयादि
कनकेंआवेसतेंनष्टभयो ॥ सोकहतहें ॥ धर्मसास्त्रमेंनितितें
निपायहोइ ॥ सगरीकृतकरेसोधर्मसास्त्रमेंअनेकप्रका
रकेदोषकहेहें ॥ औरदोषदूरिकरणार्थः अनेकप्रायश्चि
तकहेहें ॥ सोकरिकेनिर्दोषहोइ ॥ दानपुण्यब्राह्मनभोज
नहोमइत्यादिककरे ॥ पाछेंसबश्रीठाकुरजीकोंपुन्यकोंफ
लसमर्पणकरिभगवानकोआश्रयकरिमुक्तिहोइ ॥ य
हप्रकारधर्मसास्त्रमेंकहेहें ॥ सोयहमहाअघोरकलियु
गकरिकेंजीवतोदोषरूपभये ॥ औरनानाप्रकारकेपाप
करनलागे ॥ औरदोषकहें ताकोप्रायश्चितअनेककहें सोप्रा
यश्चितकोईसोंबनेनांही ॥ काहेतेंकोप्रायश्चितकरें तो
प्रायश्चितकरतकरतमें अनेकदोषहोय ॥ सोयाकलिका
लकरिकेसगरेजीवविषयासक्तभये ॥ सगरीवस्तुदोष
रूपभई ॥ सोप्रायश्चितकरिकेंहोयनांही ॥ ताकरिकेपापव
टतजाय ॥ सोयाप्रकारधर्मसास्त्रकीनितसगरेसास्त्र
कोफलहूयहकलियुगमेंनष्टभयो ॥ जद्यपिधर्मसास्त्र
मेंबहुतसाधनकहेहें स्वर्गलोककेप्राप्तकेसाधनबहु
तविस्तारसोंकहेहें ॥ सोयहतोसाधनतोसोकरें सोप्रथ
मजीवआचारकरनवारोसुद्धहोइ ॥ औरआचारकरावन
वारोब्राह्मणसुद्धहोइ ॥ देहसुद्धहोइ ॥ तबधर्मसास्त्रकीनि
तबनें ॥ सोप्रथमतोजीवअनेकदोषसहितहें ॥ औरक
लिकालकरिकेंब्राह्मणसुद्धनांहीहें ॥ केवलअपनेउदर
भरणार्थसास्त्रकोंउपदेसकरतहें ॥ तिनकेउपदेसतेंक
हाफलसिद्धिहोयगो ॥ औरदेसमलेछादिकनकेसंगतेंअ

वा.टी. लुप्त भये ॥ और कलियुग आयो दैविकें पृथ्वी अपनो रस
२७ औषधी आदि सब पदार्थ तें खेंचि लीयो ॥ सो सगरी वस्त
असुक्ष भई ॥ धर्मसास्त्र की रीतिकें सें जीव चलें ॥ जीव तो वि
षयावेष होइ गये हैं ॥ ताकरि निश्चय धर्मसास्त्र की मर्यादा
नीति के साधन नष्ट भये ॥ या प्रकार वैदिक धर्म लौकिक
तें सिद्धि न होय ॥ सास्त्र के रित के धर्म विषयादिक तें सें सि
द्धि न होइ ऐसो श्री आचार्यजी विचार के केवल एक भग
वान को आश्रय यह साधन तें जीव कृतार्थ होइगो ॥ ऐसो
निरूपण कीये ॥ या प्रकार चारि श्लोक को वर्णन भयो ॥ ४
अब और कछु आगें कहत हैं ॥ श्लोक ॥ त्रिवर्गसाधकानीति
नित्यनिर्णयउच्यते ॥ मोक्षे तत्वा विरोधात्वालौकिके प
रईस्वत ॥ ५ ॥ याको अर्थ ॥ अब याको कहत हैं जो ॥ वेद के सास्त्र
के साधन नष्ट भए ॥ तो कहा भयो ॥ तपस्यादि साधन नष्ट भ
ए तो कहा भयो ॥ तपस्यादि साधन करि देवलोक में जी
व जायगो ॥ सो देह देवता को सो नहीं होयगो ॥ तब यह जीव को इन्
द्र देवता के सगरे मो होइगो ॥ या प्रकार जीव कृतार्थ होइ
गो ॥ तब सब धर्म को नास भयो ॥ ऐसो क्यों कहे ॥ या प्रकार
कोई संदेह करे ॥ तहां कहत हैं ॥ जो धर्म करि तपस्या करि स्वर्ग
लोक में जात हैं ॥ ऐसे सास्त्रनीति में कहे हैं ॥ सो तपस्या आदि
साधन हू सत्ययुग त्रेता द्वापर तांई हते ॥ अब यह कलिका
ल में तपस्यादिक हू सिद्धि नांही होत ॥ काहे तें जीव के मन
तो लौकिक करि कें बुद्धि नष्ट भई है ॥ सो षान पान आदि वि
षय और सुख नाना प्रकार के दुःख करि ग्रसत हैं ॥ सो
तपस्या कलियुग के जीव सों होत नांही ॥ और कोई जीव क
छू कछु पुन्य करि साधनादिक करि स्वर्ग में जात हैं ॥ तथा पुन्य
कौ भोग करि कें पाछें फेरि नरलोक में परत हैं ॥ तहां स्वर्ग

लोकमेंस्थिति तोसोर रहे है। जो कोयांनकी टक्षलोंसाध
न करे होइ। जाकों पुन्य अपार होइ। सो जब महाप्रलय भ
गवान् आपु करें तब यह जीव जो देवताके लोकमें होइ
याभाति मुक्ति होइ। स्वतंत्र यह जीव भगवानमें लीन
होइ। यह जीवकों भगवद्रसकी प्राप्ति नांही है। सो ऐसो
साधन यह कलियुगमें सिद्धि नांही होत। तातें तपे स्वा
ध्यादिरूप करतमें यह कलिकाल करि अनेक प्रकारके
दुख ही पावे। भगवद् आश्रय विना सुख कोई साधनमें
नांही है। यह सिद्धांत भयो। तातें यह जीवकों भगवदा
श्रय ही कर्तव्य है। तहां वादी पूर्व करत है। जो तपे स्वाक
रि कलियुगमें मोक्ष नांही होत तो कहा भयो। च्यार प्रकार
के साधन सास्त्रमें कहे हैं। जासें जीवकों मोक्ष होसी
ज्ञांनमार्ग कर्ममार्ग योगमार्ग उपासना मार्ग यह चार
प्रकारके साधनतें जीव मोक्ष होत है। सो वेदमें सब प्रगट
है। या प्रकारको कोई संदेह होय। तहां कहत हैं। जो वेदमें
तो चार प्रकार यह मोक्षके साधन कहे। और अनेक प्र
कारके सास्त्र रीतिके साधन कहे हैं। मोक्षको उपाय सो स
गरे सो सगरे साधन कलिकाल करि नष्ट भए। ता करि
के चतुर्थ पुरुषार्थ मोक्ष नांही होत। और जो कोई मोक्ष
के साधनको उपाय करत हैं। सो देषकालके दोष करि
विपरीत फल होत है। तातें पुरुषार्थरूप मोक्ष चतुर्था
है। सोई मुख्य जानि साधन करत है। सो देषकालके दो
ष विपरीत फल होत है। तातें पुरुषार्थरूप मोक्ष चतुर्था
है। सोई मुख्य जानि साधन करत है। सो भ्रमत जीव है। भ
गवद्माया करि मोहित हैं। तातें सर्व साधनके फलकी
वासनारूप मनमें न राखे निःसाधन होइ। केवल भगव

दृढाश्रयतें कलियुगमें कृतार्थ होइ॥ तहां वाही आसंका कर
तहें॥ जो वेदमें कहेहे सास्त्रोक्त रितके साधन करि ब्रह्मलो
कमें जाय॥ तहां ब्रह्माके संग मुक्ति होय॥ सो यह साधन और
देवके वचन सत्य हे॥ जो फल न होय तो वेद असत्य होय जा
इ॥ या प्रकार कोई संदेह करें॥ तहां कहत हें॥ जो वेदने या प्रका
रके कृतार्थ कहत हें॥ एक तो सास्त्ररीतिके साधन करि स
सलोकमें जाइ॥ ब्रह्माके संग मुक्ति होइ॥ एक सो सास्त्रोक्त
साधन कछू न होइ॥ केवल भगवद आश्रय करि निसाधन
होइ सो सत्यलोकमें न जाय॥ उह जीवको आपु भगवान
कृपा करिकें अंगीकार करत हें॥ या भांति जीव कृतार्थ होइ
सो वेदमें कहेहे॥ सो सास्त्रोक्त साधन सहजीव स्वतंत्र अप
नी कृतिसों सत्यलोकमें जाय॥ यह साधन तो सत्ययुग
द्वापर॥ त्रेता इहते॥ औ कलियुगमें सगरे साधन न
बनए॥ अब कलियुगमें भगवानकों आश्रय करे॥ और
अपनों सामर्थ्य भगवानतें राखे॥ कोई साधनकों बल अ
पनें मनमें न राखे॥ तब भगवानकों मन प्रसन्न होइ॥ उह
जीवकों उद्धार करे॥ और साधन करि जो जीव सत्यलोक
में जात हें॥ ब्रह्माके संग मोक्ष होत हैं॥ सो कछु निस्फल नां
ही हें॥ काहेतें भगवान आपु प्रसन्न होइ अंगीकार नाही
कीये हें॥ तातें अक्षरमें लय होइ॥ और निसाधन जीवको
अपनों आश्रय भगवान जानिकें मोक्षतें अधिक फल
जो भक्ति सो देत हे॥ याहीतें श्रीभागवतमें कहे हें॥ ब्रह्मा
अपने मुखसों जो जो जीव मोहीकों स्वतंत्र जो ईस्वर जानि
मेरो भजन करत हें॥ सो भगवद्माया करि मोहित हे॥ जो
भगवानको सर्वोपर ईस्वर जानिकें भगवानको भज
त हें॥ सो जीव धन्य हें॥ ऐसें कहे हें॥ और गीतामें भगवा

नअर्जुनप्रतिकहेहेंजो॥ सर्वधर्मान्परित्यज्यमामेकंशार
णंव्रजेत॥ इतिवचनात॥ यहकहेंजोसर्वधर्मकोंछोडिए
कमेरीशरणिआवेंनाहीतेंसर्वकार्यसिद्धिहोइगे॥ तातेंसर्व
साधनतेंस्रेष्टभगवदशरणहें॥ सोईमुख्यहें॥ याप्रकारपां
चश्लोककोवर्णनभयो॥ अबऔरकछुकहततहें॥ श्लोकद्विधा
देहेस्वभस्तचसांख्ययोगोप्रकीर्तितो॥ त्यागात्यागविभा
गेनसांख्येत्यागप्रकीर्तितः॥ ६॥ याकोंअर्थ॥ अबवादीपूर्व
पक्षकरतहें॥ जोतुमसगरेसाधनकोनिषेधतेंनश्रेष्ठये
सेंक्योंकहतहों॥ अबहीतोवेदशास्त्रसबप्रगटहें॥ वे
दकेसाधनकर्मब्रह्मरणहें॥ सोसांख्ययोगकेसाधनकरिमु
क्तिहोइगें॥ याप्रकारकोईकहेंतहांकहतहें॥ जोवेदमेंतो
सांख्ययोगकेसाधनकहेहें॥ सोसाधनप्रसिद्धहें॥ तहांक
हेंजोत्यागात्यागकोविचारकहेंहें॥ सोकहानित्यवस्तुहें॥
ताकोत्यागनकरें॥ औरअनित्यवस्तुहेंताकोत्यागकरें
तवसांख्ययोगकेसाधनहोइ॥ नित्यकहा॥ नित्यभगवा
नकीलीलादिव्यसामग्रीसवनित्य॥ औरअनित्यकहा
मिथ्याध्याननिथ्याक्रियामिथ्याभावरणभगवदसंबंध
विनासवमिथ्या॥ यहत्यागनहोय॥ याछेंयहत्यागजवहू
तमेंआवें॥ नांहीयहजोमुख्यतेंत्यागकहें॥ परिउपदेस
कुसलहें॥ औरआपलौकिकासक्तिसोवाकरिआसिव
होइ तासोंसांख्ययोगकेसाधनकेसेंहोय॥ जबवैरा
ग्यादिकदृढहोइ॥ सुखदुखलौकिकदेहसंबंधीकछुन
व्यापे॥ सर्वकोत्यागहोइ॥ एकसाधनामेंतत्परहोयजा
यकवकछुमनचलाइमाननहोय॥ काहेतेंमुक्तिकेसाध
नमेंकेवलत्यागहीमुख्यसाधनहें॥ सर्वत्यागविनामु
क्तिहोय॥ नांहीस्वकछुकछुवासनाआयतोतहांताई

बा.टी. फेरिजायकेजन्मपावे ॥ ओरसांख्ययोगकेसाधनकर
३८ तमेंअनेकव्याकुलतोंसाधनकीयोहे ॥ ओरएकक्षणहूंक
हूंलौकिकमेंमनजायतोमोक्षफलनहोइ ॥ सगरोसाधन
कीयोहोयसोसगरोनष्टहोइ ॥ ओरदोषहोय ॥ ताकरिभ्रष्ट
होयजाइ ॥ सोश्रीभागवतमेंजडभरतजीकेप्रसंगमेंश्री
शुकदेवजीकहेहेजोभरथजीघरछोडिकेसाधनकरिवेके
अर्थवनमेंगये ॥ सोकितनेककालपर्यंतमोक्षकेसाधन
कीये ॥ सोएकदिनहरणीकेबचामेंदयाकरिकेमनल
गायो ॥ सोताकरिकेमोक्षकेसगरेनष्टहोयगए ॥ पाछेह
रणीकीजोनिकोंप्राप्तभये ॥ याप्रकारएकक्षणमनलौ
किकमेंलग्यो ॥ ताकरिकेतीनिजन्मकोंअंतरायमोक्षमें
भये ॥ ऐसोमहाकठिनसांख्ययोगमार्गहे ॥ ओरयहक
लियुगकेजीवमहादोषरूपहे ॥ एकक्षणहूंलौकिकास
क्तिनांहीछूटतहे ॥ तिनकोंमोक्षकेसेंहोइ ॥ ओरसांख्ययो
गकेसाधनकेसेंहोंइ ॥ तातेंवेदतोकहतहेसोसत्यहे
ओरसाधनहूंकेग्रंथनमेंसांख्ययोगकेप्रसिद्धहे ॥ करन
वारेब्राह्मणकोअभावकलियुगकरिकेभयोहे ॥ के
वलआपनेपेटभरणकेसाधनमेंलगेहे ॥ कोईकोई
ब्राह्मणरिषिसाधनहूंकरतहे ॥ सोउनकोंफलसिद्धि
नांहीहोत ॥ कलिकालकरिकेअनेकप्रतिबंधहोतहे
लौकिकवैदिकओरअन्नसुधनांहीमिलत ॥ ताकरि
केनिर्मलबुद्धिनांहीरहत ॥ ओरमनतोअत्यंतचंच
लहे ॥ ओरअनेकदुःसंगकरिकेमनअनेकप्रकार
केविषयमेंजातहे ॥ ताकरिकेसांख्ययोगकेसाधन
काहूसोंसिद्धिहोतनांही ॥ ओरदृढवैराग्यादिकहूहोत
नांही ॥ वैराग्यनभयो ॥ तबलौकिकत्यागकेसेंहोइलौ

किकत्यागनांहीहोत ॥ औरजबसबलौकिकत्यागकोअ
भावहोय ॥ तबवहजीवसोसांख्ययोगकेसाधनकबहूंसि
द्धिनहोइ सोजबसांख्ययोगनहोइ ॥ तबसांख्ययोगके
फलजोमुक्तिसोकोनप्रकारसोंहोइ ॥ यापांभांतियहकलि
युगमेंसाधनादिककरिमुक्तिकबहूंनहोइ ॥ तातेंश्रीआ
चार्यजीसगरेमुक्तिकेसाधनकोदूषितकरिदोषसहित
कहें ॥ केवलएकभगवदाश्रयतेंमुक्तिहूहोइ ॥ भक्तिहू
होय ॥ जोमुक्तिकीवासनाराखिसकामहोइ ॥ भगवदा
श्रयकेंप्रतापतेंमुक्तिहोय ॥ औरसगरीकामनासोऊपू
रणहोइ ॥ औरजोनिष्कामहीइभगवदाश्रयकरेतोभ
क्तिहोयजोमुक्तितेंअधिकहें सोभक्तिहोय यापकारसांख्य
योगकेसाधनहूंसिधि ॥ यहकलियुगमेंनांहीहोत ॥ तो
मोक्षकहांतेंहोयगी ॥ यापैकारिकाछठश्लोककहें ॥ अबऔर
हूंकहतहें ॥ सोकहैं अहंममेतिसंसारनासेसर्वथानिरहंकृतौ
स्वरूपस्योयदाजीवकृतार्थःसंनिगद्यते ॥ ७ याकोअर्थ
अबवादीपूर्वपक्षकरतहें ॥ जोसगरेसंसारकोत्यागक
रें ॥ सोयहसंसारमेंरहतोलौकिकअलौकिकदोऊहें ॥ सो
यहसंसारकेत्यागतेंअलौकिककोहूत्यागहोइ ॥ तबजी
ववहिर्मुषहीयजाइ ॥ औरयहसंसारमेंरहेतोलौकिकबा
धककरें ॥ सोत्यागकरेतोयहसंसारमेंसगरेपदार्थहें
सोश्रीभागवतश्रीठाकुरजीगुरुवैष्णवइत्यादिकइन
नेंतेंवहिर्मुषहोइ ॥ सोत्यागतुमकहेवैराग्यकहें ॥ सोकोंन
प्रकारकरें यापकारकोईसंदेहकरें ॥ तहांकहतहें ॥ जोय
हसंसारतोअलौकिकहें ॥ भगवानआपकसवनेरहें भा
वविनादर्सननांहीहोत ॥ यहप्रपंचात्मकलीलाहें लौकि
कतोअहंताममतातेंजानवतनोंहीं ॥ लौकिकअहंताममताहें

गी.टी. जोयहजीवअहंकारकरतहें जोयहकार्यमेंनेंकीयो मो
६० समांनकोईनाही यहअहंता ओरममताजोयहसर्वगृह
धनादिकस्त्रीपुत्रादिकमेरोहें उनकेंदुषसुषतेंआपदुषि
षसुषपावें यहसंसारहें मायाकोंयहीस्वरूपहें जोभग
वांनसर्वकेकर्त्ताहें तिनकोंभूलिकेंअपनेकोंकर्त्ताजांन
तहें यहअग्यानहें तातेंयहघरछोडिकेंसवकोंकष्टगयो
ओरअहंताममतातोछूटीनांही सोअग्यानीहें विवेकवि
चारकछूवाकोंनांहीहें ओरसंसारमेंकुटंवमेंरहतहें ओ
रभगवांनकीइछाहीसर्वप्रकारसोंअपनेमनमेंमानत
हें अहंताममताकोलेसहूजामेंनांहीहें ओरऐसोभगव
दीसर्वत्यागीहें परमग्यांनवांनहें विवेकविचारवेरागपस
गरेधर्मवामेंहें तातेंअहंताममतात्मकयहसंसारहें सो
अहंताममताअविद्याजीवकेहें सोवेदमेंजितनेंसा
धनकहेंहें सांख्ययोगआदिसोसवअहंताममतारूप
अविद्याइस्वि[illegible]हें ओरमायावादीकेमतमेंयहस
गरेव्रह्मांडकोंमिथ्यामानतहें तातेंभगवांनतेंवहिर्मुष
मायावादीभयेहें ओरग्यानीहेसोअपनेकोंब्रह्मांडमान
तहें भगवानषटगुंणसहितकोंभजननांहीकरें अक्ष
रजोसगरेंव्यापकहें ताहीकीउपासनांकरतहें सोयह
सगरेमतभक्तिमार्गतेंविरुद्धहें भक्तिमार्गमेंसर्वोपर
भगवांनसेवनियहें ओरब्रह्मांडयहजगतभगवांनको
कीयोहे सोसत्यहें भगवान्प्रपंचात्मकलीलाहें सोय
हजगतमेंअहंताममताकरिअपनोंपुरुषार्थमांनतहें
सोईमायाहें तातेंअहंताछोडिममताछोडिअपनेंकोंभ
गवांनकेदासजांनिसर्ववस्तकोंनियामकभगवान

हें॥ ऐसें ज्ञानि महात्म्य पूर्वक भगवांन कों आश्रय करें
यह भक्ति मार्ग की रीति हें॥ और मन में वैराग्य करि सर्व त्या
ग करें॥ सो त्याग जन कों नांही हें॥ वैराग्य करि कांम क्रोध मद
मत्सरता अहंता ममता यह माया के गुन हें॥ सो यन ही के
त्यागतें भगवद्भाव बढे॥ यह भक्ति मार्ग को सिधांत हें॥ का
हेतें जब अहंता दूरि होइ॥ तब मान अपमान को दुःख कछू
न व्यापे॥ और ममता दूरि होय तब सगरे पदार्थ में तें अप
नी सत्ता जांति रहें॥ तब यह जगत में अनेक दुःख हें॥ देह सं
बंधी कुटुंब आदि अनेक दुःख सुख हें सो कछू रूवाधक न हों
य॥ सो अहंता ममता कब नांस होइ॥ तब विवेक विचार वैराग्या
दिक दृढ होइ॥ या प्रकार यह अहंता ममता छोडे तब भगवद्
धर्म को आचरण होय॥ काहेतें जब लों तांई अहंता म
मता की निवृत्ति नांही हें॥ तब लों तांई स्वभाव की सिद्धि
नांही हें तहां तांई भगवद्भाव सिद्ध नांही हें॥ यह अभिप्राय
ज्ञानि अपने मन सें अभिमान निरहंकार होय॥ मन में ज्ञान क
रि आपने को जीव ज्ञानि सर्व सामर्थ रहित जांनि या प्रकार
जब दैन्य भाव को प्राप्त होय॥ सर्व तें अपने कों नीचो जांने
तब काहू प्रकार अपनी उत्कर्षता नांही आवे॥ तब अहंता छू
टे और ज्ञान होइ जो सर्व जगत भगवान के आधीन हें
सो लौकिक कर्म एक भगवद् इछा मानें॥ भगवदांग बिना आ
सक्ति काहू में न होय या प्रकार ममता कों छोडे॥ यह दोउन
को स्वरूप हें तातें अहंता ममता सर्व त्याग करें पाछें भग
वद् स्वरूप के आश्रयें स्थिति होइ॥ काहेतें यह जीव हें सो मा
या के गुन अहंता ममता के आश्रय तें॥ सो अहंता ममता
जब छोडे तब भगवद् आश्रय होइ॥ सो अहंता ममता के रिन

वां.टी. लागे ॥ जो भगवद् आश्रय न होय तो ॥ अहंता ममता को र
४९ बाधक करें । तहां अहंता ममता यह जीव को छूटे नांहीं ॥ को
टांन कोट साधन करि के ॥ वह अविद्या दूरि होत नांहीं ॥ तब भ
गवद् आश्रय करे । तब भगवांन की कृपा ते अहंता ममता
जाय ॥ या प्रकार सर्व त्याग करि के स्वरूप स्थिति होय ॥ त्यात्म
ज्ञांन निष्ठ होइ ॥ एतन्मार्गीय पुष्टिमार्गीय ग्यांन साकार स्व
रूप ऐसे स्वरूप निष्ठ होय । तो यह जीव कृतार्थ ही है रूपे
पुष्टिमार्गी भक्त भगवद् लीला में प्राप्त होइ ॥ तहां वादी पूर्व
पक्ष करत हैं । जो सास्त्र में तो निराकार स्वरूप जो ब्रह्म ता में
लीन है । ऐसी मुक्ति सर्वोपर कहे हैं । सो मुक्ति को साधन
ज्ञांनी करत हैं ॥ और तुम साकार स्वरूप की लीला में प्राप्त हो
इ । ऐसी मुक्ति कहे हो ॥ सो कौन प्रकार या प्रकार वादी आसंका
करें । तहां कहत हैं । जो ज्ञानमार्गीय मुक्ति तुच्छ हैं । काहे तें जो
मुक्ति तो अक्षर ब्रह्म में लीन होत हैं ॥ तिन को भगवद्रस
को अनुभव नांही । जो पूर्ण पुरुषोत्तम रसरास नित हैं । साका
र हैं । आनंदमात्र करपाद मुखोदरादि ॥ रसरूप सोई वेद की
श्रुति में कहे हैं । रसो वै सः इति श्रुते । सो यह स्वरूप को ग्यांन
भक्तिमार्गी दैवीजीवन को होत है । सो श्रीभागवत में दस
म स्कंध में कहे हैं । आरुह्य कृच्छ्रेण परं पदं ततः पतन्त्यधो
ध्रतयुष्मदंघ्रय इति वचनात् । और तत्त्वदीप में कहे हैं
जन्मांतरे ज्ञांनी सन्मुच्यत इति वचनात् । या प्रकार ग्यां
नी को भगवद्रस की प्राप्ति नांही है । और कोई रिषि कल्प
ना करि स्वर्गलोक के सुख को मोक्ष निरूपण करत हैं । सो
ऊ प्रमाण नांही है । स्वर्गलोक में तो रहां को पुण्य जहां लों
होइ ॥ तहां लों भोग करें । पाछे जब पुण्य क्षीण होइ ॥ तब स्व

र्गलोकतें मृत्युलोकमें गिरें ॥ अनेक प्रकारके दुष पावें औ
र जैसें अहंता ममता काम क्रोध ईर्षा आदि यह भूमि पर मा
याके गुन हैं ॥ सोई मायाके गुन स्वर्गलोकमें हैं ॥ अमृत
पान तथा देवांगना उर्वसी आदि करि अहंता ममता हैं ॥ ए
क एक को वैभव कोयी देष सकत नांही ॥ या प्रकार स्वर्गलो
कतें लेकें ब्रह्मास्थान पर्यंत भक्तिमार्गके फलको अनुभव नां
ही होत ॥ स्वर्गलोक वारेकों मायाके गुन बाधक करत हैं
संसार नांही छूटत ॥ और ब्रह्म ॥ ज्ञानीकों संसार छूटि जा
त हैं मायाके गुन नांही लागत ॥ उह अक्षर ब्रह्ममें लीन हो
त हैं ॥ इतनो स्वर्गलोकतें अधिक हैं ॥ और श्रीठाकुरजीकी
लीलारसको अनुभव तो एक सुबुद्धि भक्ति मार्गीको
हैं ॥ सो स्वर्गलोकतें लेकें ब्रह्मलोक पर्यंत अर्थ धर्म काम मो
क्ष इत्यादिक सगरें फल विषा समान छोडिकें नव भगवद्भ
जन अनन्य होइकें ॥ यह जीव करें तब पुरुषोत्तम जानें
अब या जीवकों अंगीकार ही कर्तव्य हैं ॥ तातें अहंता मम
तात्मक स्वरूप जो संसार ताके दूरि भए तें भगवद्ध
र्म दृढ होय ॥ जहां तांई अहंता ममता जीवकों लागी है ॥ त
हां तांई भगवद्धर्म नांही आवें ॥ तातें विवेक विचार करि अ
हंता ममता छोडें ॥ सो अहंता ममता रूप संसार छूटनो क
ठिन महा है ॥ बडे बडे राजा मुनीस्वर घर छोडि छोडि वनमें जा
इ रहत हैं ॥ तहां उनकों अहंता ममता बाधक करत हैं ॥
और यह कलिकाल करि अनेक क्लिस करि ग्रसित जीव
तासों अहंता ममता कैसें छूटे ॥ सो साधनके बलतें तो न छू
टे ॥ तातें सांख्य योग ज्ञान मार्गके साधनादिकतें अहंता
ममता बढत हैं ॥ परंतु छूटत नांही ॥ भगवान सर्व धर्मकें

वा॰टी॰ धर्मीस्वरूपहैं ॥ सोभगवांनकोंआश्रयकरेतोधर्मसब
७२ सिद्धिहोइ ॥ तबअहंताममतारूपसंसारछूटिजाय ॥ विनां
अंमहीतबभगवानकेंस्वरूपसेंबुधिमनदृढमनआस्थि
तहोइ ॥ तबयहजीवनिश्चयकृतार्थहोइ ॥ याप्रकारकलि
युगमेंभगवत्प्राप्तिहोइ ॥ ७ ॥ अबओरहूंकहतहें ॥ श्लोक
तदर्थंप्रक्रियाकाचित्पुराणेपिनिरूपिता ॥ अभिमानिव
ऊधाश्चेत्रफलमेकमवाप्नुत ॥ ८ ॥ याकोअर्थ ॥ अबवा
दीआसंकाकरतहें ॥ सोतुंमभगवदाश्रयतेंविनासा
धनतेंसिद्धिहोयनांई ॥ तातेंप्रथमतोसाधनजीवकोंक
र्तव्यमुख्यहें ॥ जोविनासाधनभगवदाश्रयहोतहो ॥
तोसगरेलोकनकोंभगवदाश्रयक्योंहेनांहीसिद्धिहो
त ॥ सोतातेंवेदसास्त्रकेंसाधनहीमुख्यहें ॥ औरवेदसास्त्र
कोंसाधनकोफलतोतबआलंबतांनहोय ॥ यहसगरोज
गतब्रंह्मरूपदेषें ॥ तबयहजीवअष्टांगयोगकरेंपांचप्रां
णकोंमस्तकेंचढायकेंदसमेंद्वारप्राणनिकसेंब्रंह्ममेंली
नहोय ॥ तबकृतार्थहोइ ॥ याप्रकारज्ञांनीकीउत्कर्षतासा
स्त्रपुरांनमेंहे ॥ औरहूज्ञांनहीकोंप्रकारमूलहें ॥ काहेंतेंस
गरेजगतकोंमूलप्रगटकरनवारोतोब्रंह्माहें ॥ सोब्रंह्माहू
अपनीसमाधिलगायज्ञांनमार्गकीरीतिसोंब्रंह्मभावमें
मग्नहें ॥ सोज्ञांनहीपरमफलकह्योहें ॥ औरतुमभक्ति
कीउत्कर्षतावारंवारकहतहों ॥ सोकोंनप्रकारयाप्रकार
कोईवादीपूर्वपक्षकरें ॥ तहांकहतहेंजोवेदतोसबजीव
नकेंअधिकारकोंभेदजांनतहें ॥ सोजीवतोतीनिप्रकार
केहें ॥ एकप्रवाहीएकमर्यादाएकपुष्टि सोवेदकोमूल
अभिप्राययहहें ॥ सोतोश्रीठाकुरजीकीभक्तिकरें ॥ ता

हीकोंष्वर्णसुषहोइ। औरकोंसुखनांहीहें। औरमर्यादा
जीवहें। तिनकोंभक्तिमेंअधिकारनांहीहें। तातेंउनजीव
नकेंलीयेंअनेंकप्रकारकेंसाधनकरेहें। तहांअनेंकसा
धनमेंअपराधप्रायश्चितकहेहें। फेरिउनसाधनकेंफ
लअनेंकप्रकारकेस्वर्गादिककहेहें। औरपुष्टिमार्गीय
जीवहें। तिनकेंअर्थकेवलभगवानकोंहिआश्रयकहेहें
वेदकोंअभिप्रायतोयाप्रकारकोहें। सोयहकलियुगमेंशि
वअरुसरिषिप्रगटभए। सोसिवअरुसवरेरिषिनेंभगवद्
आश्रयछुडाइकेंअनेंकप्रकारकेसाधनमेंलौकिकफ
लवतायेहें। सोकलिकेंदोषकरिसगरेंजीवअनेंकप्रका
रकेंसाधनकरनलागे। सोसाधनहूंभगवत्अर्थकरेंतो
कोईजन्ममेंभक्तिहोइ। सोभगवदाश्रयतोसवजीवतोंछो
डिदीये। स्त्रीपुत्रादिकद्रव्यरासीस्वर्गादिककेआशामेंतथाज्ञा
नमार्गीयकोंमोक्षमेंसाधनकरिसिद्धिहोतहें। औरभक्तिमा
र्गकेंसाधनमेंभगवत्स्वरूपभजनहें। औरसिद्धिमेंभ
गवद्स्मरणभजनसोसाधननांही फलरूपहीहें। औरब्र
ह्माजोसमाधलगावतहें। सोब्रह्माकोपदऊंचअक्षरब्रह्म
ताईहें। पूर्णपुरुषोत्तमकेस्वरूपमेंनांहीहें। तातेंब्रह्मलो
कमेंनायकेब्रह्माकेसंगजीवमोक्षहोतहें। तिनहूंकोंभ
क्तिमार्गकोफलभगवद्रसताकोअनुभवनांहीहोत
औरभक्तिमार्गतेंजोविमुषहें। तिनकोंतोकछूफलसिद्धि
नांहीहोत। मुक्तिहूंनांहीहोत। स्वर्गलोकहूप्राप्तनांहीहोत
सांख्ययोगादिककछूफलनांहीहोत। भगवानधर्मीहेंसो
भगवानकोंजवनांहीजानततवभ गवानकेधर्म
ऊहांतेंसिधिहोंय। याप्रकारसिषा तकहे। ५ अव

वा.टी. औरहूकहतहें ॥ श्लोकः ॥ अत्यागो योगमार्गो हि त्यागो
४३ पि मनसैवहि ॥ यमादयस्तु कर्तव्या सिद्धि योगेकृतार्थि
ता ॥ एं ॥ याको अर्थ ॥ अबवादीकहतहें ॥ जोवेदमें योगमा
र्ग कहेहें ॥ जो योगी जोगसाधनकरिके परमतत्वको पाव
तसो वेदके धर्म सबसत्य हें ॥ ताते योग करि मोक्ष होयगो
याप्रकार कोईकहें ॥ तहां कहत हें ॥ जो योगमार्ग सो यह काल
में सिद्धि होनांहि महाकठिन हें ॥ काहेते कलियुगमें त्यागको
अभाव भयो ॥ यह जीव मन इंद्रीय के वस हें ॥ इंद्रीयको रुचि
अपने अपने विषयमें हें ॥ तहां लागत हें ॥ सो इंद्रीयके संग
तें मन रहू विषयादिकमें षानपानमें मग्न हें ॥ ताकरिके त्या
ग जीवसों नांही होत सो त्याग बिना योगके साधनहूं सिद्धि
नांही होत ॥ तो योगको फल तो कहांते सिद्धि होयगो ॥ और जो
कोई नें ऊपरते त्याग कीयो ओर इंद्रीवसन भई होय तब
योगके साधन से बहोत होइ ॥ तब अनेक प्रकारके प्रतिबंध
परें ॥ सो योगमें मन चंचल होय के विषयादिकमें लागे
तब योगभ्रष्ट होइ ॥ ताते जहां तांई सर्वात्मभाव करि त्याग
न भयो होय ॥ मन पूर्वक तहां तांई योगके साधनकी सं
भावनां हून कर्तव्य ॥ काहेते कलिकालकरि जीवकी बु
द्धि ठिकाने नांही रहत ॥ सो मन चंचल होय रहे हें ॥ सो त्या
ग भावनां ही होत ॥ तहां वादी पूर्वपक्ष करें ॥ जो मन ठिकानें
नांही हें ॥ तो संयम नेम साधन करें ॥ या प्रकार संदेह होइ
तहां कहत हें जो ॥ वा स्कंधमें हें ॥ सो एकादस स्कंधमें भ
गवान उद्धवजी प्रति कहे हें ॥ अहिंसे त्यारंभ्य हाह्वा स्मृता
रस्साद्विवाक [illegible] ॥ वी यमनें अष्याद्वियह साधन जीव
सों बनि आव [illegible] त नांही ॥ काहेते मन की स्थिरता ना

ही हें ॥ सो श्रीभागवतमें कपिलदेवजी प्रति कहे हें
अतराव ज्ञानेश्चितं प्रत्क्तमसनायां प्रेमभक्तियोगेनति
व्रेण ॥ विरक्ताच्चनयेद्विषयस्मादिभिर्योगपथे ॥ इत्यादि वा
क्यहें द्विषयमांदिकेयोगकेभिर्योगपथें ॥ तो मनएकस
राकूं स्थिरता नाही होत ॥ तो येम दमादिक योगके साधन
करतेसिधि होय ॥ सो जब मन स्थिर होइ ॥ तब योगके सा
धन करें ॥ सो जब योग सिद्धि होय ॥ सो कृतार्थ होय सो योग
भगवद्‌अर्थ करे ॥ तो कदाचित सिद्धि होय ॥ या हें भक्तिकी
प्राप्ति होय ॥ ओर जो केवल मोक्ष अर्थ वह साधना करि
केरे ॥ तो या कलिमें सिद्धि न होय ॥ सो तत्वदियमें कहे हें
केवलेनां प्रियोगेनें दग्धकर्ममलाशयः ॥ योगविर्यैराजि
तठकुलिंगभिन्वा तयाभव ॥ दिषिव्रतात ॥ याते केव
लयोगादिकेके साधनकें मोक्ष फल चाहना करें
सो मुक्ति सिद्धि होय नाही ॥ अब और कहत हें ॥ श्लोक
पराश्रयेण मोक्षस्तु द्विधासोपि निरूप्यते ॥ ब्रह्मा ब्राह्मण
तायातत्त्वरूपेणैव माप्यते १ ॥ याको अर्थ ॥ अब ऊपर
कहे जो ॥ योगके साधन सिद्धि न होय ॥ ओर मोक्ष न होइ
ताको कारण कहा सो कहत हें ॥ जो पराश्रय ते मोक्ष न होइ
स्वाश्रय होय तो मोक्ष होय ॥ सो स्वाश्रय तो विष्णु भगवा
नको आश्रय ॥ पराश्रय सो सिवको आश्रय करिके भग
वदाश्रय छोडि दीये हें ॥ तातें इनको मोक्ष फल नाही होत
हें ॥ काहेते ओर जुगमें निष्णु संबंधी रुषि प्रगट होइ भग
वान को आश्रय की सिक्षा करत हे ॥ ओर कलियुगमें शि
वके संबंधी ब्राह्मण प्रगट होइ ॥ शिवके आश्रय ते मोक्ष बताये
सो मिथ्या तहां कोई कहे जो उन ब्राह्मण के बताये ते जो

वस्तुरूप भये परंतु उन ब्राह्मणन सों सब ज्ञान नहीं तिनकों तो
मोक्ष होयगी तहां कहत हैं जो ब्रह्मा के लोकमें ब्राह्मणकी
प्राप्ति है और ब्रह्मा ही ते ब्राह्मणकी उत्पत्ति है सो ब्राह्मण
जो अपने वर्णाश्रमकी रीति सो ब्रह्माने वेदमें कह्यो है ता
प्रमाण चलै तो ब्रह्मलोकमें जाय सो या कालमें ब्राह्मण
अपने स्वारथ्य के लीये द्रव्यादिक अनेक कामना करिके वेद
के कर्म करत हैं ताकरिके ब्रह्मा की ओर देवकी आज्ञाकों उ
ल्लंघन करत हैं सो ब्राह्मणकों महादोष और मोक्ष फलक
रि रहित होत हैं सो या कलियुगमें अनेक अपने लौकि
क स्वार्थ स्त्री पुत्रादिक द्रव्यादिक के लीये ब्राह्मण अनेक
उपायमें लगत हैं मनकी स्थिरता नांही है ताकरिकें मो
क्ष फल न होयगो काहेतें जो परब्रह्मरूप ब्रह्मा ब्रह्मकों
मूलरूप भगवान तिनके सेवा विना सगरे साधन मिथ्या
हैं याप्रकार कहे हैं सोई कहत हैं श्लोक तेसर्वार्था
न्खापेन सास्त्रं कि विष्णुदरितं अतासि वत्स विष्णु अनग
तो हितकारकं ॥ १ ॥ याकों अर्थः अववादी पूर्वपक्ष कर
त हैं जो तुमने शिवको महात्म्य नाही कह्यो सो वेदमें तो
सास्त्रमें ऋ पुराणांतरमें हू विष्णु कों और शिवकों दोऊ
नकों ईश्वर कहे हैं जो जगत के हितकारी कीये हैं अर्थ
धर्म काम मोक्ष यह चतुष्पदारथ विष्णु हू देत हैं और सि
व हू देत हैं सो तुमने तो शिवकी बडाई नांही कीये और
विष्णुकी बडाई बहुत कीये ताको कारण कहा याप्रका
र कोई संदेह करे तहां कहत हैं जो विष्णु कों दीयो पदार
थ है सो कोई नास करणकों सामर्थ्य नांही है और शि
वकों दीयो पदार्थ है सो विष्णु कों विरोध करे तो विष्णु सि

वकेपदार्थकोंअन्यथाकरिदेय ॥ सोश्रीभागवतमेंसास्त्र
मेंपुराणांतरमेंप्रसिद्धिहीहें ॥ हिरण्यकस्यप ॥ तथारावणा
दिककोंमहादेवकोंदीयोतथाब्रह्माकोंदीयोराज्यादिकहतो
उनसिवकीउपासनातपस्यादिकबहुतकरी ॥ तबसि
वप्रसन्नहोयकेंदीये ॥ तबरावणादिकहिरण्यकस्यपनें
भगवानसोंभगवद्भक्तसोंवेरुकियो ॥ सोभगवानतें
वहिर्मुषभये ॥ तासोंअसुरकहवाये ॥ औरअर्थधर्मका
ममोक्षराजाजीदानकरतहें ॥ तिनकोंसिवहरिनांहीक
रिसकतहें ॥ औरभगवानकेदानमेंऔरसिवकेदानमें
बहुततारतम्यहें ॥ काहेतेंजगतकेहितकारीविष्णुऔर
सिवहें ॥ सोविष्णुहेंसोअलौकिकस्वरूपदानदेकेंसंसा
रदुःषतेंनिवर्त्तकरतहें ॥ औरसिवहेंसोलौकिकसंसा
रकोंसुषस्त्रीपुत्रादिकसुषदेतहें ॥ ताकरिकेंजीवभगवा
नतेंवहिर्मुषहोतहें ॥ औरविष्णुकोपालनधर्महें ॥ औरजो
कोईभगवानसोंआश्रयकरे ॥ ताकोंभक्तिहोय ॥ और
सिवसंहारकर्त्ताहें ॥ तथास्वर्गदानकर्त्ताहें ॥ तथामोक्ष
क्षकोंदेतहें ॥ सोमोक्षमेंजीवकोंनासहोतहें ॥ भक्ति
मार्गतेंविपरीतफलहें ॥ याप्रकारसबसिवकोदीयो
विरुधफलहें ॥ औरविष्णुकोदीयोविरुधफलनांहीहें
याप्रकारकहें ॥ ११ ॥ अबऔरश्लोककहतहें ॥ श्लोकः ॥ वक्त
नस्थितिसंहारकार्येसास्त्रप्रवर्त्तकौ ॥ ब्रह्मसैवताद्रशाय
स्मात्सर्वात्मकतयोदितौ ॥ १२ ॥ याकोअर्थः ॥ अबवादी
पूर्वपक्षकरतहें ॥ जोसास्त्रमेंऐसेंकहेहें ॥ जोसंसारकों
नासहोय ॥ तोभगवत्प्राप्तहोय ॥ सोसिवतोयहसंसार
केनासकर्त्ताहें ॥ सोप्रसिद्धिहीहें ॥ सोजबसिवसंसारकों

नांज्ञा कीयो ॥ तव जा जीव कों मोक्ष भयो तव प्रतिवंध हे सो
संसार हें ॥ सो सव नें हरि कीयो ॥ तो सिव को कीयो कार्य तु
म केसे विपरीति कह्यो ॥ या प्रकार कोई संदेह करे तहां कह
त हें ॥ जो शिव अहंता ममतात्मक संसार हे ॥ ता कों हरि नां
ही करत हें ॥ सिव महाप्रलय करि माया के गुनन में ल
य करत हे ॥ जो भगवान कों प्राप्ति करत होय तो फेरि सृ
ष्टि प्रगट होत हें ॥ तव फेरि कहां तें होय ॥ तातें सिव तो जी
व कों भगवान के धर्म में होय ॥ तहां तें नीचे पारत हें काहे
तें मोह सास्त्र को प्रगट करि सगरे जीव कों भगवान तें
वहिर्मुष कीये ॥ या प्रकार जीव को नास होइ ॥ ऐसे सास्त्र
कें प्रवर्त्तक सो सिव हें ॥ और [illegible] ब्रह्म कों आश्रय छु
ड़ाय कें ॥ अद्वैत ब्रह्म त[illegible] के साधन को निरू
पण कीये ॥ और वेद के अभिप्राय [illegible] सर्वात्मभाव भगवा
न में सिधि होइ [illegible] विपरीत फल निरूपण कीये
अपने मोह सास्त्र के अनुसार संसार सुष रूप फल कहे
हें ॥ सो जीव तो माया करि ग्रसित हें ॥ सो यह स्वर्गादिक
सुषहीं कों मोक्ष मान्यो ॥ या प्रकार निरूपण कीये ॥ अब
और रूप कहत हें ॥ श्लोक ॥ निर्दोष पूर्ण गुण सा तात त त्वा
त्रे तयो कृता भोग मोक्ष फले सातुं स कों द्वाव पिय द्यपि
१३ ॥ याको अर्थः ॥ अव कहत हें जो सिव को कीयो मत हें
सो मोह सास्त्र दोष रूप हें ॥ और भगवान कों कीयो वे
द श्री भागवत गीता इत्यादिका निर्दोष पदार्थ हे
तेसें ही श्रीठाकुर जी हू निर्दोष पूर्ण गुन सर्वात्मब्रह्म
त्व श्रीकृष्ण हे ॥ सो श्रीभागवत में प्रथम स्कंध में कहे
हें ॥ परः पुरुष एई हास्य धते स्थित्यादये हरिविरंचि

हरेतिसंज्ञा ॥ इतिवचनात ॥ यत्पादिकवचनकरियहजां
नतो ॥ जोएकभगवानकेभजनतेंसवसंतुष्टहोतहें
औरयहभगवदमायाहें ॥ ताकरिसर्वमोहेहें ॥ ब्रह्मासिव
पर्यंततो औरदेवतामनुष्यकीकहाएगानांहें ॥ औरयह
संसारमेंदोयपदारथमुख्यहें ॥ एकतोभोगएकमोक्ष सो
तसो अज्ञानीभोगकोसाधनकरतहें ॥ काहेतेंज्ञानीभो
गकोंतुछजांनिकेंमोक्षहीकोसाधनकरतहें ॥ अज्ञांनी
भोगहीकोंसारजांनतहें ॥ सोपरुदोयपदार्थकेअर्थभग
वदनावतारत्वेनविष्णुऔरसिवकोंप्रागट्यहें ॥ सोसिव
भोगकेदाताहें ॥ विष्णुमोक्षकेदाताहें ॥ ताक्रमेंतारतम्यहें
जोभक्तसिवकोंनांहींभजत ॥ औरभगवांनकोंभजत
हें ॥ तिनकोंतोभगवानमोक्षदेतहें औरजोजीवसिवकूं
भजतहे ॥ औरभगवानतेंविमुखहें ॥ तापरमहादेव
कवहूनप्रसन्नहोइ ॥ सोभोगकूंनांहींदेतहें ॥ तातेसवके
दाताभगवानहीहें ॥ तहांयाहीऔसंकाकरे ॥ जोसिवकेभ
जनतेंभोगसवपांमिलेऔरतुमकहोभगवानहीभो
गमोक्षकेदाताहें ॥ ताकोकारणकहा ॥ याप्रकारकोईसंदे
हकरे ॥ तहांकहतहें ॥ जोसिवकेभजनतेंभोगमिलेतोस
ही ॥ परंतुभगवानतेंविमुखभरे ॥ तहांभोगकूंजाय ॥ जै
सेंहिरण्यकस्यपकोंसिवप्रसादतेंभोगमिल्यो ॥ सोभ
गवानकेंविरोधकरिनासभयो ॥ तातेंभोगमोक्षकेदा
ताभगवानहीहें ॥ यहसिधांतभयो ॥ अवऔरस्लोककह
तहें ॥ स्लोक ॥ भोगःसिवेनमोक्षस्तुविष्णुनेतिविनिश्चयः
लोकेपियप्रसक्तंभुक्तिमूयाच्छितकीहिचित ॥ १४ ॥ याकोअर्थ
अवकोईसंदेहकरेंजोमहादेवकूकोईसरपदवीहें सोसा

स्त्र कहत हें ॥ सो ईस्वर को धर्म सिव में होयगो ॥ तब सास्त्र
में महादेव कों ईस्वर करि निरूपण कीयो हें ॥ तो जेसें भगवान
के आश्रय तें मोक्ष होत हे ॥ तेसें ही सिव के आश्रय तें मोक्ष हो
यगो ॥ या प्रकार कोई कहे ॥ सो संदेह दूरि करत हें ॥ जो शिव
को ईश्वर पदवी हें ॥ सो या तें ब्रह्मा कों हू ईस्वर पदवी हें ॥
सो भगवान अधिकार दीये हें ॥ ता तें ब्रह्मा सृष्टि को उत्प
त्ति करत हें ॥ ओर सिव संसार कों संहार करत हें ॥ सो जेसें लों
प्रभु की आज्ञा होय ॥ तहां तांई ब्रह्मा सृष्टि करें ॥ जो ओर जब भ
गवान की इच्छा संहार करिवे की इच्छा होय ॥ तब ही सिव सं
हार करें ॥ ओर विष्णु को पालन धर्म हें ॥ सो सब की रक्षा ई
करत हें ॥ ओर जीव आश्रय करें ॥ ता कों मोक्ष देत हें ॥ ओर सि
व कों मोक्ष देवे की आज्ञा नांही हें ॥ ओर भोग देवे की आज्ञा
हें ॥ ता तें सिव भोग देत हें ॥ मोक्ष देवे की सामर्थ्य नांही हें ॥ ओ
र जो कोई सिव की स्तुति वा सेवा करि सिव कों प्रसन्न करे ॥ ओ
र सिव प्रसन्न होय के कहें जो तुम मांगो ॥ तुम मांगोगे सो ई देउं
गो तब यह जीव मोक्ष मांगें ॥ ओर कछू नहीं मांगे ॥ तब सि
व कों बडो संकोच करत हे ॥ तब सिव विष्णु के पास जाय वि
नती करत हें ॥ जो हमारो भक्त एक हें ॥ सो मोक्ष ही मांगत
ओर कछू लेत नांही ॥ ओर में वा कों वरदान दीयो हुं ॥ सो तु
म कृपा करिकें मोक्ष देउ तो होय ॥ तब विष्णु सिव के संको
च तें वा कों मोक्ष देत हें ॥ सो उह जीव कों सिव के लोक में
महा सुख होय रहत हें ॥ पाछें महाप्रलय होत हें ॥ तब सिव
के संग माया के गुन में लय होत हें ॥ ता मोक्ष में भगवद
रस की प्राप्ति नांही हें ॥ ता ही तें भगवदीय ना मोक्ष अभि
लास एहि सामोद्य कों रंच कहू चाहत नांही ॥ ओर वि

क्षु जो भगवान तिनें काहू सों पूछनो नाहीं परत ॥ याकुं सु
तेही अपनें भक्तकों मोक्ष देत हें ॥ काहेते विष्णु स्वतंत्र हें
सिव परवस हें ॥ तातें सिव भोग के दाता हें मोक्ष के नाहीं
और विष्णु मोक्ष के और औ भोग के दोऊन के दाता हें ॥ यह
निश्चय सिधांत हें ॥ और जो भगवान की आराधना करि
मोक्ष मांगत हें ॥ ते अधम जीव हें ॥ मोक्ष महा तुछ पदार
थ ॥ और भोग महा तुछ पदारथ हें ॥ भोग पाये पाछें नर
क मिले ॥ और मोक्ष भये तें जीव कों नास होय ॥ तब भग
वान के स्वरूप को अनुभव को करे ॥ तातें भक्तिमार्ग में
वैष्णव सकल पदारथ कों मोक्ष पर्यंत तुछ मानत हें ॥ या
प्रकार सिद्धांत कहे ॥ १४ ॥ अब और कहत हें ॥ सो कहा अ
तिप्रियायतिदर्पि जीवते कुपितो वा निवयतार्थ प्रदाने
न तदिपत्वं तदाश्रयः ॥ १५ ॥ याको अर्थ ॥ अब वाही आसं
का करत हें ॥ जो भगवान तो सब के पालन कर्ता हें भग
वान की दृष्टि सब बराबर हे ॥ और दयानिधि हें सो अ
पने भक्त कों अधिक फल देत हें ॥ सिव के भक्त कों अधि
क फल नाहीं देत ॥ और साधन की अपेक्षा देखि कें फल दे
तहें यगे ॥ सो जीव तो दोष निधि हे ॥ तब फल काहू को
नहीं तहोयगो ॥ तब भगवान के भक्त को फल कैसें मिले
गो ॥ या प्रकार को ई संदेह करें ॥ तहां कहत हें जो ॥ भगवान
सब के हितकारी हें ॥ सब पर दयावंत हें ॥ परंतु जाकों जित
नों अधिकार होइ तितनों फल देत हें ॥ सो ई गीता में कहे हें
ये यथा मां प्रपद्यंते तांस्तथैव भजाम्यहं ॥ इति वाक्यात
जो ऐसें न करें तो असुर कों और भक्त कों बराबरि फल
कैसें होय ॥ जो बराबरि फल में अधिक होय तो भक्त में अ

षिककह्यो॥ औरसर्वकेकर्त्ताभगवांन॥ यहधर्मतोसुनें
हीसिधिहोहें॥ औरअपनेंभक्तनोभगवांनकोंअतिप्रि
यहें॥ काहेतेंभक्तसर्वछोडिकेंएकभगवांनकोंआश्रय
करिकेंरहेहें॥ सोभक्तकेसेंनप्रियहोंइ॥ ऐसेंअपनेंभक्त
केसाधननांहीदेषत॥ जोदृढआश्रयकीयेहें॥ तिनकों
साधननांहीदेषत॥ अपनेंस्वरूपवलतेंउनकोंसर्व
सिधिकरतहें॥ औरजोभक्तनांहीहें॥ अनेककर्मादिकयो
गादिकतथाकांमनांअर्थसिवकोंभजनकरतहें॥ तिन
कोंसिवद्वारालोकिकफलरूपआपदेतहें॥ सिवमेंफल
देवेकीसामर्थ्यहें॥ सोभगवांनहीकोंहे॥ याप्रकारभगवां
नआपुअपनेंफलकोंदेतहें॥ औरअन्यसृष्टिकोंआप
नेंगुनावतारद्वाराफलदेतहें॥ तातेंभगवद्भक्तकोंतोके
वलभगवांनहीकोंभजनअनन्यहीयकेंकर्त्तव्यहें॥ सो
ईभगवद्गीतामेंश्रीभगवांनप्रतिकहेहें॥ सर्वध
र्मान्परित्यज्यमामेकंसरणंव्रजेत॥ जोसर्वधर्मकोंछो
डिएकभगवांनकीसरनदृढरहें॥ सोभगवांनकीसर
णहीसर्वसाधनकोफलहें॥ जोभगवांनकीसरणहोइ
तोजासाधनकोकरें॥ निरफलहोयजाय॥ तातेंभगवदी
यहें॥ सोमोक्षकीअपेक्षाकरिभगवांनकोंनांहीसेवत
केवलचरणकमलकीभक्तिहीचाहतहें॥ सोभगवदीय
भोगार्थसिवकोंभजनस्वप्नमेंनकरेंगे॥ औरजोको
ईभोगकेअर्थसिवकोंभजनकरतहें॥ तिनकोंभोगहू
मिले॥ औरमोक्षहूहोय॥ याप्रकारसिवकोंभजनतेंवि
ष्णुकोंभजनश्रेष्ठहें॥ तातेंभगवदीयकोंएकभगवदा
श्रयहीकर्त्तव्यहें॥ यहसिधांतभयो॥ अवऔरकहतहें

श्लोकः। प्रत्येकसाधनंचैतत्द्वितियार्थेमहान्स्त्रमःजी
वास्वभावदुष्टादोषाभावायसर्वदा १६ याकोअर्थ। अ
बवारीकहतहेंजी अनेकसाधनसास्त्रमेंकहेहें। औरअ
नेंकफलकहेहें। साधनविनाकछूफलनांहीमिलत। लौ
किकवैदिकमोक्षपर्यंतसबकेंसाधनहें। तेसेंहीभक्तिके
साधनहोयगे। औरतुमकहेंभक्तिमार्गमेंसाधनजीव
हें। तिनकोंफलकीप्राप्तिहोतहें। औरकोनांही। सोसाध
नविनांतुछपरस्थनांहीमिलततोभक्तिकेसेंहोय। या
प्रकारकोईसंदेहकरें। तहांकहतहेंजोंभक्तिमार्गमेंसा
धनईनांहीतोकरेगोकहाकाहेतेंजीवतोस्वभावक
रिदुष्टहें। औरभगवानसर्वगुणपूर्णहें। सोजीवकोंक
हासांमर्थहें। सोसाधनकरिभगवानकोंप्रसन्नकरे
गो। औरजितनोंबलहेंदेहइंद्रीयपर्यंतसोसबभग
वानतेंविमुषहोयरह्योहें। सोसाधनमेंअनेकप्रतिब
धकरतहें। जातेंएकभगवानकोस्मरनहोयरहें। तोभ
गवानअपनेंस्वीयजानेयाजीवकेंसगरेदोषदूरिक
रिकेंअंगीकारहीकरें। औरसास्त्रमेंअनेकसाधनकहेहें
सोसकामहें। कोईविष्णुकोंभजनकरतहें। कोईमोक्षके
निमत्तकरतहें। कोईभोगकेंअर्थकरतहें। कोईचतुर
पुरुषार्थकेंनिमत्तसाधनकरतहें। सोसबकामना
सहितहें। सोतिनकोंभक्तिनांहीकहीये। औरगुनाव
तारकेंआश्रयतेंभक्तिमार्गकोफलनांहीहोत। सोक
हतहें। विष्णुहें। सोसात्विकहें। सोसात्विकमोक्षमेंजीवकों
लयहोतहें। ब्रंह्माहेसोराजसीहें। सोराजससारादिक
स्वर्गादिकब्रह्मलोकादिकमेंप्राप्तकरतहें। औरसिव

हें ॥ सोतामसीहें ॥ सोत्रिवुकें आश्रयतें भोगादिकमिलें
पावे भोगादिकनकों नास होय ॥ याप्रकार सगरे देवतागु
णसहित हें ॥ सो रजोगुन ॥ तमोगुन ॥ सतोगुन ॥ मायाक्
तुहें ॥ असे संसारहीकों दान करत हें ॥ जाके पाएतें भगवा
नजीव वहिर्मुख होइ जाय ॥ और भक्तिमार्गीय जे भगवदीय
हें ॥ सो स्वर्गकों और नर्ककों बराबरि जानत हें ॥ ताते कछु
चाहनांनाही राषत हें ॥ तथा दूसरो अर्थ कहत हें ॥ जोम
र्यादामार्गीय मुक्ति चार प्रकारकी सारूप्य सामिप्य सा
युज्य सालोक्य इनकूंकों तुछ करिकें जांनत हें ॥ असे भ
क्तिमार्गीय जो सुधपुष्टि हें ॥ सो निर्दोष पूर्णगुण विग्र
ह ॥ श्रीकृष्णसौं फलहें ॥ श्रीकृष्णसो साधन हें ॥ श्रीकृष्ण
विनां और कछु जानत नाहीं हें ॥ यह फलादिसा केंलक्षण हें
और पथ्यमाधिकारी जो नासहज दोष जीवकों दुःषसु
भाव हें ॥ सो असौ अनुग्रहमानां होहोत ॥ सो पुष्टिमार्गमें
श्रीआचार्यजीद्वारा श्रीकृष्णकी शरण होइ ॥ तो सर्वदो
षनास होइ काहेतें जीव तो दैवी हें ॥ संगदोषतें दुःषसुभा
व भयो ॥ तातें जीवकों सतसंग फलरूप होत हें ॥ भग
वान कृपा करत हें ॥ सो ईकहत हें ॥ ममैवांसो जीवलोके
इति भगवद्वचन हें ॥ असो नानाव्यपदेसाति वेदांत
सूत्राच्च ॥ असे अंगीकृत जीव भक्तिमार्गमें आयकें सा
धनदिसा वारेपर कृभगवान कृपा करत हें ॥ साधनकी
अपेक्षा नांहीं देषत हें ॥ और लौकिक वैदिक कर्ममें फ
लमें साधनकी अपेक्षा हें ॥ जितनो साधन करें ॥ तितनों
ई फलमिलें ॥ और पुष्टिमें साधन नांही ॥ कृपाहीतें फल
हें ॥ और जीवके दोषकों कृभगवान हीस्वीकरत में

आसमर्थहे ॥ यहसिधांतभयो ॥ अवऔरऊकहतहें ॥ श्लो
क ॥ श्रवणादिततप्रेम्णा सर्वकार्यसिध्यति मोक्षसुवि
शिस्तस्मोभोगा स्वसिवतत्स्तथा ॥ १७ ॥ अववाहीआसका
करतहें ॥ जोपुष्टिमार्गमेंसाधननांहीहे ॥ भगवानकृपाही
करिसर्वफलदेतहें ॥ सोभगवानकृपाकोंनभांतिसोंकरें
सोऊकछूउपायकरेंजोआपतेंकृपाकरतहोंयतोसगरे
जीवपरकाहेनांहीकरत ॥ कृपाकोंकहालछिनहें ॥ याप्र
कारकोईकहे ॥ तहांकहतहें ॥ श्लोक ॥ स्मरणंभजनंचापिन
त्याज्यमितिमेमती ॥ भगवानकोंभजनस्मरणछोडनोनां
ही ॥ निरंतरकरे ॥ तबभगवानप्रसन्नहोयकेंकृपाहीक
रें ॥ औरमर्यादामार्गमेंकछूसाधनबहुतहें ॥ औरफल
तुछहें ॥ औरपुष्टिमार्गमेंसाधनऐसावालेकोंभगव
दशास्त्रकोंश्रवणभगवानकेकीर्त्तनादिकसेवादिस
वेथांनिरंतरकरें ॥ यापुकोश्रवणादिककरिभगवदम
हात्म्यहृदयमेंआवे ॥ तबसेवामेंरुचिहोइ ॥ तबसेवाभली
भांतिसोंकरें ॥ तबभगवानमेंप्रेमहोय ॥ तबअष्टप्रहरभ
गवदस्वरूपलीलाकोंभावनामेंमग्नरहें ॥ तबवाकोंकु
छूसाधननांहीकर्त्तव्यहे ॥ लौकिकवैदिकमोक्षपर्यंत
फलसर्वमेंतेंवासनादूरिहोइजाय ॥ काहेतेंपरलोकि
कजोमोक्षसोभगवानकेकीर्त्तनमात्रतेंमोक्षहोइ ॥ ऐ
सोतोभगवानकोनामहे ॥ कीर्त्तनादेवकृष्णस्यमुक्तबं
धपदंव्रजेत ॥ इतिवचनात ॥ सोभगवानमेंजबप्रेमहो
इ ॥ तबमोक्षकीहूअपेक्षानेहोइ ॥ यहउचितहीहे ॥ तातें
प्रेमबिनाहूश्रीकृष्णकेनामकोकीर्त्तनमात्रतेंमोक्ष
होय ॥ ऐसोभगवानकेनामकोमहात्म्यहे ॥ औरयह

भगवानकेवचनसोसालोक्यसार्ष्टिसामीप्यसारूप्यै
कत्वमप्युतदीयमानंग्रहणांतिरिक्तैंविनामत्सेवनंजना
इतिवचनात॥ ऐसेभगवदीयभगवद्भजनातिरिक्तंच
तुर्थामुक्त्यादिककोंग्रहणनांहीकरतहें॥ सोईपद्मपुराण
मेंकहेहें॥ श्लोक॥ नकर्मबंधनंजन्मवैष्णवानांचविद्यते
विष्णोरनुचरत्वंहिमोक्षमाहुर्मनीषिणः॥ इतिवचनात ता
तेंभगवदीयकोंभगवद्भजनहीसाधनहें॥ सोवेदकी
श्रुतिमेंकहेहें॥ यमेवैषवृणुतेतेनलभ्य इतिश्रुते॥ याप्रका
रभक्तिमार्गीयकोंप्रथमअधिकारीकोंश्रवणमुख्यहें
सोश्रवणतन्मार्गीयद्वारातन्मार्गीयग्रंथश्रीसुबोध
नीजीनिबंधादिककोंकरें॥ तबभगवानमेंप्रेमहोइ॥ सोप्रे
मभयेतेंसकलमनोरथपुष्टिमार्गीयफलस्वरूपानंद
कोंअनुभवहोइ॥ ऐसेंकहतहेंजोविष्णुकोंजेसेंमोक्षसुल
भहें॥ तेसेंहीसिद्धकोंभोगसुलभहें॥ सोतेसेंहीसमर्पण
श्रीआचार्यजीद्वाराकीयेतेंअपनेंस्वात्मप्रभुमेंसर्वस्वनि
वेदनकीयेतेंश्रीयदुनंदनसरणपुष्टिमार्गीयमोसलीला
रसमेंप्राप्तहोतहें॥ सोविस्तारकरिआगेंश्लोकमेंकहत
हें॥ श्लोक॥ समर्पणेनात्मनोहितदीयस्तंभवेद्ध्रुवं॥ अत
दीपतदाचापीकेवलंश्चेतसमाश्रय॥ १०॥ याकोअर्थः अब
वादीआसंकाकरतहेंजोअपनेंस्वात्माभगवानतोप्राणी
मात्रकेंहृदयमेंविराजतहें॥ औरभगवानहीसर्वकोंफल
हें॥ तोभगवानकेस्मरणतेंसकलकार्यसिद्धिहोयगी॥ सो
वेदमेंभगवानकेंसंचकहेहें॥ ताकोंसाधनकरें॥ श्रीआ
चार्यजीद्वारासमर्पणकरिकेंस्वात्मप्रभुकोंस्मरणकरें
ताकेकीयेंतेंअधिककहाहें॥ याप्रकारकोईआसंकाकरे

तहांकहतहेंजो गुरुबिनांयहसंसारतेंकोईछूटेनांही अ
नेंकसाधनादिककरिकेंब्रह्माकीपदवीकोंपावें शिवकीपद
वीकोंपावें परंतुसंसारदुःषतेंछूटेनांही ताकोदृष्टांतकहत
हें जैसेंकाष्टमेंअग्निहें परंतुवहअग्निकोंइतनोसामर्थ्य
नांहीहें जोअपनेंपेमेंअगनकीजोकाष्टकोंभस्मकरिअग्नि
रूपकरें जबकोईअरुनीमिलेंकाष्टकोंमथिकेंबाहिरअग्नि
प्रगटकरें तबवहकाष्टजरिकेंअग्निरूपहोयजाय तैसेंप्रा
णीमात्रकेंअंतःकरणमेंभगवांनअंतरजामीरूपसाक्षीव
तहें औरयहजीवकोंअहंताममतात्मकसंसारदूरिनांही
होतहें औरयहजीवजबसामर्थ्यवानगुरुकीशरणआवें
तबनामात्मकभगवानकोंश्रवणद्वाराहृदयमेंगुरुप्रवेश
करतहें सोनामात्मकभगवानकोंस्मरणकरें तबअग्निकी
कीनांईभगवानबाहिरप्रगटहोइ अपनेंस्वरूपकोंअनु
भवकरावें तबसर्वात्मभावकीप्राप्तिहोइ तबयहजीवकूं
संसारदुःषनिवृत्तहोइ सोश्रीआचार्यजीद्वारानिवेदनकीऐ
तें निश्चेंभगवदीयहोय औरध्रुवजीश्रीठाकुरजीकीकृपा
तेंसदास्थितिरहकेंरसभगवानकेंस्वरूपानंदकोंअनुभव
करें तातेंसमर्पणकीयेबिनांगुरुद्वाराबिनांआपतेंजीव
मोहबंधनकोंछुरिनांहीसकत औरसमर्पणभएपाछेंहरि
जोभगवानसोंनिश्चयतजततनांही औरजोसमर्पणनहो
इ तहांतांईदृढआसंगीकारनहोइ सोभगवानकहेहें औ
क येदारागारपुत्राप्तप्राणान्वित्तमिमंपरं हित्वामांसरण
पाताकथंतांसत्यक्तुमुत्सहे इतिबचनात् याप्रकारसम
र्पणकरिकेंदारागारादिकसर्वभगवदर्थविनयोगकरें
तिनकोंभगवानछोडतनांही याप्रकारयहभक्तिमार्गी

वा.टी. यमोक्षसाधनप्रतिपादित हांवादी कहे जो ब्राह्मणतो
५. उत्तमवर्ण हैं तिनकों सरणआयेते भगवान मोक्ष देत हैं
अन्य जो स्त्री शूद्रादिककों उधारके सें होयगो या प्रकारको
ई संदेह करें तहां कहत हैं जो सुंदर ब्राह्मण हैं और समर्प
ण श्री आचार्यजी द्वारा नांही भयो है तो उन ब्राह्मणकों भ
क्तिमार्गमें योग्यता नांही है और भक्तिमार्गको फल कहू
नांही है और स्त्री शूद्रादिक पापयोनि में है सो समर्पण भ
गवानकों कीयो हैं सर्ववस्तुकों आश्रय कीयो हैं तिनकों
भक्तिरसकों अनुभव सर्वथा होयगो सोई भगवद्गीता
में भगवान कहे हैं श्लोक मां हि पार्थ व्यपाश्रित्य येपि स्यु
पापयोनयः स्त्रियो वैश्यास्तथा शूद्रास्तेपि यांति परां गतिं
इति वचनात् या प्रकार समर्पण बिना पुष्टिभक्तिकी सि
द्धि न होय केवल भगवान ही को जब आश्रय करें तब स
र्ववस्तुकी सिद्धि होय यह सिद्धांत भयो १८ अब और कहू क
हत हैं श्लोक तदाश्रयतदीयत्वबुद्ध्यै किंचित्समाचरेत् स्व
धर्ममतिष्ठन्वौभारद्वैगुण्यमन्यथा १९ याको अर्थ तहां वा
दी आसंका करत हैं जो गुरु तो सगरे जगत में करत हैं और
विप्रगुरु कहू सास्त्रमें कहे हैं ता करिकें जो कहें सोई करें ताके
आश्रय तें भक्ति होत न होइगी या प्रकार कोई संदेह करें तहां
कहत हैं जो जा प्रकार की चाहना होइ तैसे गुरु करीयें तो प
दार्थ मिलै मायावादी ब्राह्मणादिककों गुरु करीये तो मा
यामत में लीन होइ मर्यादामार्गीयकों गुरु करीये तो वेदो
क्त कर्मादिकमें लीन होय पाछें स्वर्गादिककी प्राप्ति होय औ
र पुष्टिमार्गीकी चाहना होय तो श्री आचार्यजी के कुल द्वारा स
मर्पण करिये और श्री आचार्यजी कृत पुष्टिमार्गीय

धनहे ॥ सो सर्व करीये निरंतर तब ही यह फलकी सिधि होइ
अन्यथा नांही ॥ ताते अवस्य आचार्य पदवी होय ॥ और अपने
स्वधर्म में स्थिति होइ ॥ असे गुरु करीये निरंतर ॥ स्वधर्ममनु
तिष्ठन्वे लोकस्ते माय कल्पते ॥ इति वचनात् ॥ असे आचार्यकु
लमें स्वधर्माचरण होय श्री कृष्ण सेवादिक श्री भागवतमें त
त्वज्ञ होइ ॥ पुरुष होय दंभ करि रहित होइ ॥ तिनके सरन उन
की आज्ञा प्रमान स्वधर्माचरण सेवा कृष्ण करें ॥ तब फल पुष्टि
मार्गीय होइ ॥ श्री आचार्यजी वान्तु रूपो वे इति श्रुति के व
चन कहे हें ॥ अब भागवतमें कहे हें ॥ आचार्य मां विजानीया
नाव मन्येत कर्हिचित् न मर्त्यबुद्ध्या सूयेत सर्व देवमयो गु
रु ॥ भक्तिर्नस्याकृतं तस्य मन्त्रे [illegible] शौचवत् ॥ इति वचना
त् ॥ और पुराणांतरमें कहे हें ॥ [illegible] गुरौ स्त्रीता गुरु
री ॥१॥ येन कश्चन ॥ त[illegible] पुलेन गुरु में वश साद्ये ॥१
इति वचनात् ॥ या प्रकार गुरु हे सो साक्षाद्भगवद्भाव राखिके
सगरी कृत करे तो पुष्टिमार्गीय सिद्धि होय भक्ति ॥ और गु
रु को अपमान होय तो फल को तो अभाव होय जाय ॥ तब जि
तने साधन करें ॥ सो सर्व निर्फल होय जाइ ॥ केवल श्रम ही
होइ ॥ उलटे साधन विपरीत फल देहि जो गुरु प्रसन्न होइ
तो सगरे साधन फलरूप होइ ॥ और गुरु अप्रसन्न होइ तो
सगरे साधन प्रतिबंध कों करत हे ॥ या प्रकार पुष्टिमार्गी
य फल प्राप्त को उपाय यह वार्त्ता सो या ग्रंथमें प्रगट कीये हें
निरूपण कीये हें ॥ अब चार्य श्लोक करि ग्रंथ को उपसंहार
पूर्ण करीयत हे ॥१८॥ श्लोक ॥ इत्येवं कथितं सर्वं नैतज्ज्ञा
ने भ्रम पुनः ॥२॥ याको अर्थ ॥ या प्रकार वेद शास्त्रोक्त पुष्टि
मार्गीय मुक्ति कों निरूपण कीये हें ॥ और ऐसो ज्ञान जब

बा.टी. श्रीआचार्यजी महाप्रभुन की ॥ कृपा ते होय ॥ तब अनेक प्र
५१ कार के मतरूप भ्रम तिनको नास करें ॥ तब निर्मल हृदय
होय ॥ अंतःकरण में प्रकास होय ॥ तब अर्थ धर्म काम मो
क्ष महपुरुषार्थ न यां चतुर्धा भक्ति सालोक्य ॥ १ ॥ सामिप्य
सायुज्य ॥ २ सारूप्य ४ ॥ यह चतुर्धा भक्ति को फल तुच्छ जानिकें
फल नाहीं चाहें ॥ तब जानिये जो पुष्टिमार्गीय भक्ति भई
तब अलौकिक मोह जो भगवान में तत्परता मन एकत्र ए
करून जाय ॥ या भांति आवस्य ग्रंथ प्रतिफलित होय ॥ या
प्रकार श्रीआचार्यजी महाप्रभु बालबोध ग्रंथ प्रगट क
रि अपने अंतरंगी सेवक बालकरूप तिनको बोध कीये
अब टीका कर्त्ता श्रीदेवकीनंदन तामें कहत हैं ॥ जो श्रीआचार्य
जी महाप्रभु यह ग्रंथ बालबोध को प्रकास याते कीये ॥ जो क
अनेक प्रकार के मत कलियुग में भए ॥ तामें जीव भगवद
धर्म छोडि के भ्रमत भये हे ॥ और यह पुष्टिमार्ग को साध
न फल अत्यंत गूढ ॥ सो जीव सों जान्यो जाय नाहीं ॥ ताके
जनायवे के लिये प्रगट कीये हैं ॥ और मैं जो यह बालबोध की
टीका अलौकिक अग्नि रूप श्रीआचार्यजी महाप्रभु तिन
के बल तें अपनी मति के अनुसार करी है ॥ जैसें मेरे हृदय
में श्रीआचार्यजी महाप्रभु प्रेरणा करी हैं ॥ तैसें मैंने कही है
यां में मेरो कछु सामर्थ्य नाही है ॥ ऐसे भाव सों जो कोई टी
का अवलोकन करें भाव हृदय में राखेगो ॥ तिनके हृदय में
यही श्रीआचार्यजी महाप्रभु की कृपा तें बालबोध को प्रका
स होयगो ॥ ताते पुष्टिमार्गीय के भगवदीय को निश्चय ने
म करि या भाव सहित करें ॥ तो सर्व सिद्धांत स्फुरत होय
गे पुष्टिमार्गीय फल निश्चय होयगो सिद्धि होयगो ॥ या

प्रकारयहवालबोधकोंसिधांतसंपूर्णभयो॥ इतिश्री व
डेदेवकीनंदनजीकृतवालबोधकीटीकासंस्कृतताकीभा
सासंपूर्ण॥

॥श्री हंसायनमः॥ अथ नामरत्नाकी टीका
लिख्यते ॥ यन्नामार्कको अर्थ॥ श्रीरघु-
नाथजी श्री गुसांईजी के अष्ठोत्तरशतनामक
हतहैं॥ ताकी पूर्वपीठिका जिनके नामरूपी सू
र्य ताको उदयतें पापरूपी जो अंधकार ताकोस
मूह ताको नाश होइ॥ और भक्तको हृदयरूपी
जो कमलनको समूह फूले॥ श्री हंसरूपी जो भ्रमर
रवा में विराजे॥ ऐसे जो गुसांईजी तिनके नामको
आश्रय करत हों या नामको सूर्यकी उपमा कही
यत है जी॥ जो सूर्यके भीतर नारायण रहत हैं॥ तै
सें श्री गुसांईजी के नाम भीतर श्री सहित रसरूप
पूर्ण पुरुषोत्तम रहत हैं॥ तातें नाम अंतरब
र्त्ति पुरुषोत्तम हैं॥ सो भक्त [illegible] कहावत भए॥ ते सर्व
जो जासु खानुभव है [illegible] स्वरूप आश्रयन
करे हैं॥ अरु नामको आश्रय कहे॥ अभिप्राय है॥
जो स्वरूप सो तो [illegible] अलौकिक भिन्न हैं॥ अरु ना
मको आश्रय तो सुगम है॥ श्लोक॥ अनुष्टुभ या
सो त्रको अनुष्टुभ छंद॰ अक्षर कोंपद॥ सो छंद है॥
अरु ऋषि अग्निकुमार जो श्री विठ्ठलनाथजी ति
नतें जसैं उत्पन्न भए॥ जो श्री रघुनाथजी सो ऋ
षि हैं॥ और याके विषै सकल अलौकिक शक्ति
सहित श्री मद्वल्लभ के आत्मज॥ श्री गुसांईजी
देव हैं॥ ऐसे स्तोत्र को विनियोग कहा होत है॥ तहां
कहत हैं॥ श्लोक विनियोगः॥ भक्तको श्री प्रभूजी
को दर्शन स्पर्श॥ सेवादिली लापवे आत्मक सक
लरस सिद्धि के विषें विनियोग है॥ अब नामक है

तहे ३ श्लोकः ॥ विठ्ठलइ ति: ॥ प्रथम विसे
षणो आत्मकनामनकहें और मूलनामकहे ॥ ता
को अभिप्राय ए जो व्यापिवैकुंठमें जीवामें एही
नामको प्राधान्य है ॥ प्रभूको ए नाम अत्यंत रुचि
करे तातें ए धर्मात्मक नाम हृदय प्रविष्ठ होइ
तो आगें धर्मात्मक नाम जो तास्हित अनुभव
होइ ॥ परंतु एतो सब जीवसाध्य हे नहीं ॥ तातें तो
ए कृपा करे तो होइ ॥ सो नाम कहत हें ॥ ४ ॥ कृपासिं
धु: ॥ जो रंचहूं कृपायुक्त होय तो जीवके संपूर्ण
अपराधन विसारिके अपने रसको दान करे तो एतो
कृपाके समुद्र हें ॥ तहां भक्तनको दान रसकी न्यून
ता रहे ॥ तथापि प्रभु कृपा करिकें न्यून करते और
स प्राप्ति का हे ते होइ ॥ सो कहत हें ॥ ५ ॥ भक्तवश्य:
॥ जो बस होइ सो भक्तनको सुख चिंतन करे ॥ ताहू
में भक्त वश्यता जीवके जीव अभिमान सो तो अ
त्यंत प्रसन्न भक्तको सुखदान में उत्साह सं
युक्त रहे ॥ जो आप भक्तके वस होय रहत हे ॥ तथा
पि भक्तको ममत्व मनोहर ... कदाचित न हो
य ॥ तहां कहत हें ॥ ६ ॥ अतिसुंदर: ॥ जहां प्रत्यंग
अंगके विषें कामको हूं मोहें ॥ जनकता हें तहां
भक्तजो निजस्नेही को मनोनुरंजनके विषें कहा
आश्चर्य ॥ कोई कहेगो जो लौकिकके विषें को
ई कोई पुरुष अथवा स्त्री सुंदर होत हें तेसें सुंद
र होयगो ॥ तामें कहा अलौकिक में बडाई बनई
॥ तहां कहत हें ॥ ७ ॥ लसज्जीवानसाविष्ट: ॥ जा
कोई भगवदाविष्ठ होइ ताको सौंदर्य महिमा ॥ का

हूतें वरनी न जाय ॥ तो एश्री कृस्न अनंतरूप होइ
अनंत भक्त सहित परवस होइ जो व्याकरत हैं ॥ तो
में जो अनंत कोटि सुधासमुद्र तें हू अधिक जो र
स है ॥ ताकौं जो संपूर्ण आवेस्या मग्न है ॥ ताको सौंद
र्य को कहा कहिये ॥ याही तें दूसरो नाम कहें ॥ श्लो
कः ॥ श्री मानः ॥ सो भाव जो सर्वश्री जो मुख्य स्वा
मिनी वृंद तिन कौं रमन्यो है हृदय ता तें श्री मानः
ऐसे जो अनंतरूप प्रभू अनंत भक्त सहित ली
लारस मगन जाके अंतर सदा या विषय रहत हैं
ऐसे महापुरुष भूतल में कहां तें प्रगट होइ ॥ औ
रु प्रगट होइ तो वे अपने रस निमग्न होइ ॥ सो जी
वकौ और कब देखे ऐसें देखें होइ ॥ तहां कहत हैं
वल्लभनंदनः भूतलके जीवकै सनमुख ख्याल क
तन्नरिके प्रगट होइ ॥ दर्सनादिक सुख देत हैं
अरु जब पि निरसाधन हैं ॥ तथापि श्रीवल्
लभाचार्य गृह प्रगट भए ॥ आचार्य पुत्र भए ॥ ता
तें जीव प्रपंच में परे ताके आप जीवकी चिंतापरा
यन होइकें जीवनकौ कृतार्थ करत हैं ॥ तहां पूर्वपक्ष
जो ऐसे महापुरुष प्रगट हैं ॥ तब सकल लोककौ उ
द्धार होइ जात होइगो ॥ जब सब असुरादिककौं हू उद्धा
र होइ जाय ॥ तब भगवानने अपनी लीलाके अर्थ
सब जगत रच्यो हैं ॥ सो भगवद्इच्छा जामें विषम होइ
प्रभू प्रसन्न न होइ ॥ तहां कहत हैं ॥ १० ॥ दुर्दर्शी ॥ भूत
लमें बिराजत हैं ॥ तोहू अलौकिकता पूर्ण हैं ॥ सो
काहूकों दर्शन होत नांही ॥ दूर दुखसों दर्शन हैं जो
कों अर्थात जीवकृत साधनां न लकोटि ॥ सो हूं द
र्शन होइ नहीं ऐसो वाचो नि बततें ॥ या बचन करि

ना: २

एसिद्धभयो जोजहां असमनपहुंचतनहीं तहांदुद्ध
कहांतें पहुंचै संदेहजो ॥ जबकाहूकें दर्शनस्पर्शादि
कर्मन आवें तबउनकों भजन कितेंकरहा सिद्धिहो
इ ॥ तहांकहतहे ११ ॥ भक्तसंदर्श्या ॥ भक्तकों आप
स्वतः ॥ कृपावंतहें ॥ तातें भक्तकों दर्शन प्रसंनतासों
देतहें ॥ ताहीमें संदर्श्य कहे ॥ जोसम्यकतो आछी
री तिसों ॥ ताकों अर्थजो संभाषण वचनसुधादि
स्वात्मसेवनादिक ॥ अलौकिक आनंदवृंददान
संयुक्तदर्शनदेतहें ॥ तहांपूर्वपक्षजो ॥ आपकों
साधनतें हू दृष्टिगोचरनहीं और भक्तकों आपहीं
तें कृपापरायनहें ॥ ताकों कारण कहा तहांकहतहें
१२ ॥ भक्तिगम्यः ॥ भक्तिवश्यत्वसें प्रियहें ॥ सोभक्ति
वंत भगवदीय परवश्यत्वं प्राप्त हें ॥ जैसें कोई महाराज
हें ताकों कोई आपहीं सों मनवकरिवेकी इछाकरे
तोवेहू जोगन आवें औरजो आपतें काहूके उप
रप्री तिहोय तोसर्वगुनसंयुक्त आपके आधी
नहोइरहे ॥ सोहीते भक्तिगम्य केवल निर्विकार
रसभक्तिकरिकें गम्यतो पाजाय ॥ भक्ति बिनाको
टिकजनमेंहू नहीसें ॥ साधन तें तेंहू हाथन आवें
तबयह संदेहरह्यो जो भक्तकों कालकर्मस्वभावा
दिककों भयतोहेनहीं ॥ परंतु प्रभुप्राप्ति विषे अंत
राय बहुतहें ॥ सोप्रतिबंधकोंन प्रकारसों निवि
र्ती होइ ॥ ताकों उपायहेनहीं ॥ तातें भय होयतर
हों कहतहें १३ ॥ भयापहः प्राप्ति प्रतिबंधककों
भय ताकों स्वतः ॥ दूरिकरतहें ॥ आप अपने प्र
मेयबलकरि प्राप्तहोइ ॥ आपकों अखिलानंद
स्वाददानकरतहें ॥ तहां संदेह होयजो ॥ कबहू

यदांलक रिके पररि आपुके लीलारसमें निमग्न होय
तबवें भक्तिको कोनगति होइ ॥ तहांकहतहें १४ ॥ अ
नन्यभक्तहृदयः ॥ एकाएप्रभु बिनां चौदहलोकमें भग
वांनपर्यंतकाहूकों जांनेनहीं एसेजो अनन्यभक्तहें
वाके हृदयमें रहतहें अरुवासों सदां अखंड विलास
करतहें अरु एसे अनन्यभक्तको सबजनतें वचायके अ
पने हृदयमें नितराखे तो वाकों कोनबालको भयरह्यो
॥ औरकहा न्यूनतारही ॥ तहांसंदेहहोइ ॥ जो एसो जो
वहें हो नहीं ॥ तो याके ऊपर ऊतली करतहें सो कहां यातें
कहतहें ॥ १५ ॥ दीनानाथैकसंश्रयः ॥ जो दीनजो स्वता
धनसंपत्तिबलनरहित आर्तिवान ॥ अरु अनाथ जे
काहूकोकछूबस्तुको आश्रय मनमें मांनतनांहीं ॥ एसे
जो भक्तहें ताके आश्रयहें ॥ सोही आप अपनें चरणक
मलमें राखतहें ॥ दीन अनाथपर आप अत्यंत प्रसन्न
रहतहें ॥ सब कहतहें जो तिनको प्यार लगतहें तो या र
हीरसको ग्यान होइगो श्री पुरुषोत्तम अंबुजे रसमुद्र
रसके रसको अनुभव होइगो ॥ तहां कहतहें ॥ १६ ॥ रा
जीवलोचनः ॥ सर्वदां कमलीयबरराजीवलोचन ॥ श्री
गोवर्द्धननाथजी श्रीस्वरूपावेश अरु वेही ध्यानकरिकें के
वलतन्मयताजो राजीवलोचन तांकों प्राप्त भए हें ता
तें पुरुषोत्तम सोही लीला करतहें ॥ तहांसंदेह होय
जो लीला तो बहुत प्रकारकी हें ॥ पूजना दिवहु लीला
हें तहांकोंनसी लीलारसानुभव करतहें ॥ तहांकहत
हें ॥ १७ ॥ रासलीलारसमहोदधीः ॥ जहां नित्यरा
स नित्यसिद्धाके संगपरवसहोइ ॥ प्राणनाथ विहार
महारासमुद्रके संपूर्णरसास्वादकहे ॥ तहांसंदेहहोयजो

ता॰
३

वेरसतोप्रभुके समान धर्महोयतवप्राप्तहोइ ॥ तत
होकहतहै ॥ १८ ॥ धर्मसेतुः ॥ जो भगवद्धर्मकहेहैं
तेभगवांनकें धर्म तिनकेंसेतुः ॥ जो अवधि
याकरिकें एसद्धर्मयो ॥ तोसंपूर्ण अलौकिकध
र्मकरि पूर्णहे ॥ कोउ असनकी रलताकोलेत्राहूं
नसंभवे ॥ तहांसंदेहहोइजो तुमतो केवलरसात्म
कपुरुषोत्तमसंवंधकरिकें वर्णनकिए अरुआ
पुतो द्विजरूपधरिकें जगतीतलमें ॥ देवीजी
वउद्धारलिमतप्रगटहे ॥ तोवाकोसेवाद्विकप्र
कारकी सीला करीचाहिये धर्मवतायोचाहि
येसोकहांतें करतहो ॥ तहांकहतहैं ॥ १९ ॥ सु
रसेव्यः ॥ जैसेंको अवहूं क्षुधातुरहोइ वाको
भावतो भोजन भावसुखहीहोय रुकधकीसर
भावनांहूंनाहीं ॥ जैसेंतुं जनके चरणाश्रितकोंसेव
नाद्विक मम ॥ प्राधान्यवसांनहूं सुखरूपहैं तहां
संदेहहोयजो ऐसो सवसेवनहैं ॥ तोशरण ॥ चरणा
श्रयवीचमें कहायाको करनौपडे सुखनसवकोउ
॥ अनन्यभागीवती हूं क्योंन हिकरे तहां कहतहें ॥ २० ॥
व्रजेश्वरः ॥ अनन्यभागी शरणागतरहित ॥ आश्रि
तखिनाजेकोउहे ॥ देवी होइतोहू सवनकोंइनको
सेवन अल्पंत असाध्यहै ॥ केवलव्रजकेहीईश्व
रस्वांमीहैं ॥ व्रजस्थ जो जो जा स्थश्रवहैं ॥ सोशा
रण आयकें सुखसों सेवनकरिसकतहैं ॥ व्रजेश्वर
येनांमतें यह जताए जो अपने भक्तकोंसंपूर्ण व्रज
लीलाको दानकरतहैं ॥ तहांसंदेहहोइजो प्रभूतो
याप्रकारकोसंपूर्ण कोटि जन्ममें हूं द्विकानें आवे

नांहीं ॥ तहां कहतहें ॥ २१ ॥ क्षांत: क्षमाके निर्वधी
सागरहें ॥ जो भक्तको अपराध पडे सो वा दोषकों
गुणकरि मांनें तहां कोई संदेह करे तो दोषकों गु
ण जांनतहें ॥ तब कहेंहें सेवनादिक जो गुण ताकों
विशेष करि कहा जांनतहोइंगे ॥ तहां कहतहें ॥
२२ ॥ सर्वज्ञ: ॥ सब भक्तनके हृदयवर्त्ति जो गुण
अरु दोष ताको स्वभाविक जांनहे ॥ दोषदेखिके
आपमें दयाको प्राबल्य बहुत तातें दोषकों गुण
रूप जांनतहें ॥ अरु सेवादिक जो गुणहें ताकों
देखिकें अत्यंत संतोष पावतहें ॥ प्रभू संतोष
पाए तें भक्तकी सेवा सफल होइ ॥ तहां संदेह होय जो सुफ
ल भए तें कहा सिद्ध होइ तहां कहतहें ॥ २३ ॥ सर्वकामद:
जो भक्तके हृदयमें स्व[illegible]य सब स्वविक अति
अलौकिक अत्यंत [illegible] कामनादिक हें ता
कों आप देवें ॥ कामनामें ॥ वांछितकामद: ऐसें न कहें ॥
अरु सर्वकामद: कहें ताकों अभिप्राय यहहें जो भक्त
वांछनां कहांतें करेंगे ॥ जहां मनवालो लेश मात्रहू जो
उचित नाहीं तातें वांछनां करे विना अपनी तजो निज
दो तासु सुखसागरहें ॥ सो सब दांन करें ॥ तहां संदेह होय
जो निजजनको नारस दांन कहा यत्तें करें तहां कहतहें ॥ २४
रुक्मिणीरमण: ॥ हियां रमणार्थ प्रगट भएहें स्वत: स्व
त: रसदांन करिवेकों योग्य करि श्रीरुक्मिणीजी जो
मुख्य स्वामिनीजी द्वारा अंगीकार करतहें याहीतें यामा
रगमें श्रीस्वामिनीजीकी कृपा मुख्यहें ॥ तहां संदेह होइ
जो द्विजतनुधारी हें ॥ सो श्रीरामचंद्रजीकी नांई एकप
त्नीव्रत होइंगे तातें रसरीति सो भक्तको अंगीकार तो

ा: नसंनवें तहां कहतहें २५ ॥ श्री आ: ॥ श्री जो श्री पद्मा
ध वती जी उनकें ईश्वर स्वामी ॥ हें यातें कपल्ली वृत्त लि
वृत्य पर्यंक वल्लपुर्व ज्ञापनार्थ उत्तम भक्तकों रसरी
ति ॥ सो जो लोमैं सुखदांन कहें ॥ सो तो भक्त सब एकही
प्रकार एक मार्गमें ॥ एकरीतिसों चलतहें ॥ अोर जो भाव
तारतम्य है ॥ सो अंतः ॥ कर्णको धर्म हें ॥ सो तो दीसत
नांही ॥ सो कैसें जानें ॥ तहां कहतहें २५ ॥ भक्तपरि
ह्लक: भक्तनकें हृदय स्थित जो प्रेमाधारण स्नेह वि
षयीक विविध भावरूपी रत्न ॥ ताकें परख: परिक्षा
करिवेकें विसें परम चतुर हें ॥ यहां संदेह हें ॥ जो केव
ल परीक्षामात्रही करतहें ॥ तातें कहा अधिक कहां
सिद्धि तो नहीं ॥ तहां कहतहें ॥ २६ ॥ भक्तरक्षेकदक्ष:
भक्तकें भावको ॥ अन्य आश्रयादि दुसंग ॥ दिक तें रक्षा कर
तहें ॥ रक्षा कि एतेंवें ऐसो संरक्षण विस्तार फलप
र्यंत भरसतहोय ॥ अोर रक्षा कीए विना मूल हितें भाव
दृढ जो चतुरहें ॥ जाको भाव यह जो ॥ अंतःकरण
में भाव विना ग्राककरिवेको अन्य पदारथ बहुत हें ॥
कालकर्मस्वभाव: अन्यदोष संगदोष दुर्बुद्धि प्रभ
तीहें ॥ तातें भावकी रक्षा करिके सिंचनादिक करि
के वृद्धि उपजावकें अपनो कैंक फलजनक करि सं
कतहें ॥ तातें चतुर कहें ॥ तहां संदेह जो भावको फल
जनक करतहें ॥ सो फल कहा हें ॥ तहां कहतहें ॥ २७ ॥
श्री कृष्णभक्तिप्रवर्तक ॥ श्री कृष्ण सो फलरूप श्री स्वा
मिनी सहित ॥ जाकें विषें केवल फल भोगारूप जो
भक्ति ताके प्रापक जैसें मंत्रके वस देवता हे तेसें
भक्तिकें वस श्री कृष्ण होइके भक्तकों रस फूलदांनों

र्यरमण करतो ॥ ऐसी श्री रस विषें जो भक्ति सो
भूतलमें प्रवर्त करत हैं तहां संदेह जो भूतल में
तो मायावादी कर्मजड ॥ जो आसुर हैं सो सब सर्वत्र
भरि रहे हैं ॥ तो उनके आगे भक्ति कैसें प्रवर्त्त होय
तहां कहत हैं ॥ २८ ॥ महासुर तिरस्कर्त्री ॥ असुर जो अ
न्यमार्गवर्त्ति ॥ महासुर जो मायावादी मोह जनक
अन्यास्त्र शास्त्र प्रवीन उन सब जनकों स्वमत भक्तिमा
र्गस्थापन पूर्वक ॥ अन्य शास्त्र मायावाद खंडनक
रि महासुरकों तिरस्कार करत हैं ॥ निरंतर करत हैं ॥ तहां
संदेह जो ॥ शास्त्र तो बहुत हैं ॥ वादहु बहुत हैं ॥ बहुत ब
कत हैं ॥ वेदहू बहु प्रकार करत हैं ॥ सो सब प्रकारकों ज्ञा
न विना न होइ [illegible]हीं ॥ तहां कहत हैं ॥ २९ ॥ सर्व शास्त्र वि
दग्धा ॥ ॥ षट्शास्त्र चारि वेद अष्टादश पुराण श्री
भगवतगीता पूर्व लिखे सो तो हैं ॥ ए सब जनके अ
ग्रवर्त्ति हैं ॥ ए सास्त्र वेद पुराण सबहू द्याकासमें स्व
रूपात्मक प्रत्यक्ष होत हैं ॥ अथवा सब सास्त्र जो
रस सास्त्र उनकों विलसाता ॥ जो रस भक्त उनके वि
षें अग्रगण्य मुख्य स्वरूप हैं ॥ तहां आसंका होइ जो ए
स्वरूप कहे तो वाको तो सब जाणे ॥ जो रसात्मक भक्त होय
अपुरुए भक्तिलो वर्णाश्रम धर्म विषें जो कर्म हैं सो उ
नकरि वंधाय रहे हैं ॥ सो उहांतें छूटिकें रसमार्गमें कैसें
आवें ॥ तहां कहत हैं ॥ ३० ॥ कर्म जड्य भिदु सांशु ॥ कर्म
रूपी जो अंधकार वाकों भेद ऐसें ॥ अंसोः सूर्यः सूर्य के
उदय तें अंधकार आपुहीतें निवर्त्त होइ ॥ रविकों श्र
म करनों पडे नहीं ॥ तैसें कर्मादिक संबंधन आपहीतें

ता:
ह

नरुचिश्रु चिबुक कहतहें ॥ ३८ ॥ प्रियवृंदावनो चल: प्र
यहे रमणस्थल आदि वृंदावन जो परमसोभी अरु
अनवल जो सोश्री गिरगोवर्द्धन ॥ जहां अखंड विहार
हे ॥ तहां कहेंगे जो गोवर्द्धन के विषे रुचि कोंन हत्ति
सो जांन पडे तहां कहतहें ॥ ४० ॥ गोवर्द्धनादि मख ल
त: ॥ कार्तिक शुदि प्रतिपदा के दिवस गोमख ॥ एसो
महायज्ञ भोग समर्पणरूप ॥ सो प्रतिवर्ष करतहें ॥ त
हां कहतहें ॥ जो याकी मुख्यता एसी क्यों ॥ सो कहतहें ॥
॥ ४१ ॥ महेंद्र मखछिप्रिय: ॥ महेंद्र जो इंद्र ॥ ताके मख
को निंदे एसे जो गोविंद ॥ सो हे प्रिय जाकों एयज्ञमें
श्री कृष्ण आप श्री लरूप होयके यज्ञपूजा ग्रहणकी
एयाही ते एयज्ञ करतहें तातें यज्ञ भोक्ता प्रियहें
कोई कहेंगे जो आपसुखानुभव बहुतहें ॥ ताएं भग
वल्लभश्रीको अन्नकूटादिक क्यों करतहें तहां क
हतहें ॥ ४२ ॥ वल्लवीलोक सर्वस्व ॥ श्री कृष्ण जो
जाहें सर्वस्व ज्योंको ॥ श्री कृष्ण के चरित्र करिकें आ
प सर्वदा सुखानुभव पूर्ण हे ॥ तहां संदेह होय जो
श्री कृष्ण तो रूपनाम विनोदेन जगती इति यावच
नसों भगवान द्विरूपहें ॥ एकरूपात्मक ॥ एकनामा
त्मक ॥ तामें लीला करिकें रूपात्मकके सुख
सुखानुभवतो कह्यो परंतु नामात्मकके सुखानुभव
तो शेष रह्यो तहां कहतहें ॥ ४३ ॥ श्री भागवत भाव
वित: ॥ श्री भागवत द्वादशस्कंध करि द्वादशांग श्री
पुरुषोत्तम स्वरूप ताको भाव ॥ जो यथार्थ स्वरूप ॥ ता
के ज्ञाता अंतरवर्त्ती ॥ अति अलौकिकानंद भोक्ता ॥ त
हां संदेह होइ जो श्री भागवत तो टीका करि अपने मा

श्रीनुसारभावग्रहणकरतहें ॥ तहांकहतहें ॥ ४४ पि
तृप्रवर्त्तितपथप्रचारसुविचारकः ॥ पितृजोश्री
वल्लभाचार्यजी उननेप्रवर्त्तितकस्योजोभक्तिमा
र्ग ॥ ताकोजोप्रचारकरनोताकेविषेंउत्तमरीतिसों
विचारकर्त्तावाहीसुकुंपुष्टिभक्तिमार्गकेविषेंसंद
पूर्णश्रीभागवतकेभावकोग्रहणकरतहें ॥ तहांसंदे
हजोयामार्गमेंजोप्रवर्त्तहोइ ॥ ताकोकहाफलहोइ
॥ तहांकहतहें ॥ ४५ ॥ व्रजेश्वरप्रीतिकर्त्ता ॥ यामा
र्गकेंविषेंकेवलव्रजनकेईश्वर ॥ श्रीकृष्णताकेंवि
षेंअप्रतिउत्तमजोस्नेहताकोदानकरतहें ॥ सोफल
तहें ॥ एप्रीतहें ॥ सोव्रंस्यादिकनसूंस्वप्रेमेंहूहेंनहीं
तहांसंदेहहेंजो प्रीतरूपीफलभयो ॥ तोयाफल
केंविषेंकहास्वादहें ॥ तहांकहतहें ॥ तन्निमंत्र
णभोजनकः ॥ आपश्रीव्रजेश्वरकोप्रथमप्रातःका
लकेंविषेंनिमंत्रणकरतहें अपनेभवनविषें
॥ विविधप्रकाररसभोजनकरावतहें ॥ निमं
त्रप्रातर्यो ॥ याहीभावसोंअरुगृहरसकेप्र
कारसोंसर्वस्वअंगीकारकरावतहें ॥ वाहीप्रकारको
सुखस्वादः ॥ निजभक्तकोदेतहें तहांएसेंआयजो
याप्रकारकोप्रौढभावविषेंलीलामेंमग्नहेंतोश्री
यसोदाजीनंदरायजीप्रतिकोजोवात्सल्यरसवि
षेंअनुभवनोहेंतांहूं ॥ तहांकहतहें ॥ ४६ ॥ वालजी
लादिसुप्रीतः ॥ वाललीलाश्रीयशोदाजीसंगली
लनादिकहरिगण ॥ चौर्यादिककेंविषेंअत्यंतहें
प्रीतिजाकों ॥ याहीतेंश्रीमन्नवनीतप्रियस्वरूपास
क्तहें ॥ याप्रकारसों काइकमानसिकधर्मकहे ॥ अव

ता: ७

वाचनीकधर्मकहतहें ॥ जोवाणीसों आयकहाकर
तहें ॥ तहांकहतहें ४७ ॥ गोपीसंबंधसत्कथः ॥ अ
नेकपुराणादिकहें ॥ तथापिश्रृंगाररसमंडनादिजो
श्रीगोपीजनसंबंधी ॥ अतिउत्तमकथाहेंजोकृष्णा
पहोंतश्रीलामध्यपातीहें तातेंसंबंधपदकहें ॥ फेर
कौतुकहेंगाजो ॥ प्रथमतोप्रौढलीलापत्तानकहें ॥ पाछें
बाललीलादिकके विषेप्रीतिकहितो ॥ एसेंकोसंभ
वेंतहांकहतहें ॥ ४८ ॥ अप्रत्तगंभीरतात्पर्यः ॥ अति
सेंगंभीरआडोहें ॥ अभिप्रायजाकोबाललीलाकें
विषेंअष्टसेप्रौढलीलारसानुभवकरतहें ॥ सोप्रेष
पर्यंकसयनयामेंसबकहेंहें ॥ याहीतें आगलोंको
नामकहतहें ४९ ॥ कथनीयगुणाकरः ॥ प्रमाणमें
वृंदावनादिकलीलाविषें [illegible] करिकथन
योग्यजोगुणताकें [illegible] हें ॥ अभिप्रायएजो
रतहें सोसांभलहें ॥ [illegible] पुरुषोत्तमसंतोषहो
इवेकेंगुण [illegible] आपविषेरहतहें ॥ श्री
रभक्तकोंप्राप्तिहोइ [illegible] नहींतेंहोइ ॥ तबसंदेहहो
यजोदेवीअधिकोंतोपरंपारचलीजायहें ॥ अरु
पुरुषोत्तमसंतोषणकेंगुणसोकेवलआपविषें
हेंहोंकहेंतबेएभक्तकेबंसाकें विषेंप्रभूप्रसंन्न
ताकेंगुणकहांतें आवेंगे ५ तहांकहतहें ॥ ५० ॥ पि
तृवंशोदधिविधु ॥ पिताश्रीआचार्यजीमहाप्र
भुनितसष्टकें अंगीकारर्थस्वबंशरूपीजोउदधि
समुद्रविस्तारकीइच्छाकिए ॥ ताकेंआपविधुचं
द्रमारूपभए ॥ चंद्रदर्शनतेंसमुद्रवृद्धिकोंपावत
हें ॥ स्वबंशोत्थपितृस्तोष ॥ यावत्बालकदिकें

संपूर्णश्री वल्लभवंशमें प्रभु प्रसन्न करिवेके गुण हैं
सो दान करत हैं ॥ फेर याही भाव दृढ करिवेके लिए दू
सरो नाम कहत हैं ॥ ५१ ॥ स्वानुरूपसुतप्रसूः ॥ आपुकें
अनुरूप पुत्रनें जनक हैं जैसें आप अलौकिक गुण
पूर्ण हैं तैसें अपनें सुतहू पूर्ण हैं ॥ तातें भक्तके वंश
कों अपनें वंश द्वारा अलौकिक प्रभु प्रसन्नता साध
क गुणकौ दान करि वायकें प्रभु प्राप्त करावत हैं ॥ याही
तें सर्वत्र कीर्ति व्याप्त होइ रही है ॥ सो आगिलें नाम
करि कहत हैं ॥ ५२ ॥ दिक्चक्रवर्त्तिसत्कीर्त्तिः ॥ दसो
दिसाके विषें प्रसरति हैं ॥ उत्तम अलौकिक कीर्ति
जस जाकौ वंश करिकें वेद शास्त्र स्थापन करिकें भक्ति
मार्ग प्रगट करिकें ॥ अपुनें अलौकिक अनेक ध
र्मादिक करिकें यज्ञादि सर्वत्र होय रह्यो है ॥ तहां आ
संका होइ जो ॥ भक्तिमार्ग सिद्धांत कैसो है ॥ तहां कहत
हैं ॥ ५३ ॥ महोज्ज्वलचरित्रवांन: ॥ अति दुर्बल
नगबत्सेलस्मकः ॥ प्राप्त: ॥ काजल आरंभकें शायन
पर्यंत भगवत्क्रियात्मक है चरित्र जाकें ॥ आप प्र
भूकौं श्री यशोदाजी व्रजस्थ भक्त मुख्य स्वामिनी
प्रभू तिनकें भावसों सेवा करि रिझवत हैं ॥ ए मुख्य
भक्तिमार्ग की क्रिया है ॥ सो आप करिकें भक्तकों व
तावत हैं ॥ तहां संदेह जो ऐसो महत्व देखिकें इनके
विषें प्रसन्न कोंन होत हैं ॥ तहां कहत हैं ॥ ५४ ॥ अने
क क्षितिपश्रेणी मूर्द्धन्यस्तपदांबुज: ॥ अनेक राजा
की पांक्ति ॥ ताके मस्तक करि संलग्न हैं ॥ चरण कम
ल जिनके ॥ अनेक पद कहे सो पृथ्वी राज ॥ पंडित
राज भक्तराज सुघरराज ॥ देवराज ॥ कविराज ॥ स